"अणु-बमबारी के संस्मरणों का संग्रह" के लेखन में सहयोग का प्रकल्प

अणु-बमबारी पीड़ितों के लिये

हिरोशिमा नेशनल पीस मेमोरियल हॉल

अणु–बमबारी के संस्मरण

शीर्षक	लेखक	अणु-बमबारी के समय आयु	पृष्ठ
अणु-बमबारी में दो बेटियों को खोना	माकीए फुजीइ	22	1
मौत से बाल-बाल बचा	जिरो शिमासाकी	14	7
अणु-बमबारी पर मेरे अनुभव	त्सूनेमात्सू तानाका	31	15
मां के प्रति मेरी भावनाएं	हिरोको कावागुची	8	23
उस गर्मी की अविस्मरणीय घटना	चियोको शिमोताके	24	31
तुम भाग्यशाली हो	तोशिओ मियाची	27	41
शाँति की कामना अगली पीढ़ी के लिए	तोकिओ माएदोइ	12	49
कभी नहीं भरते युद्ध के घाव	क्योको फुजिए	9	57
देखा मैंने नरक	किमिको कुवाबारा	17	67

अणु-बमबारी में दो बेटियों को खोना

माकीए फुजीइ

● अणु-बमबारी से पहले के हालात

उन दिनों हम योकोगावा के पुलसे 100 मीटर की दूरी पर पूर्व में योकोगावा की गली नं. 1 में नदी के किनारे रहते थे। उस समय हमारे परिवार में चार सदस्य थे: मेरे पति (कियोशी), मैं, हमारी 3 साल की सबसे बड़ी बेटी काज़ुको और 6 महीने की सबसे छोटी बेटी कियोमी।

अणु बमबारी से पहले जब भी मैं रेड अलर्ट का सायरन सुनती थी तो अपने दोनो बच्चों को लेकर बंकर में छुप जाया करती थी। ऐसा कई दिनों तक होता रहा और आज भी उसकी यादें मेरे जहन में ताज़ा हैं।

● अणु-बमबारी से हुई क्षति

6 अगस्त की सुबह, मेरे पति ने काम से छुट्टी ली थी और वे घर पर थे क्योंकि उन्हें सेना में भर्ती होने संबंधी आदेशपत्र मिला था। रेड अलर्ट रद्द होने के बाद मैं और मेरे बच्चे ऊपर लुका-छिपी खेल रहे थे।

अचानक एक जलता हुआ गोला खिड़की में से हमारे घर में आकर गिरा और मैं और मेरे बच्चे इस तरह नीचे गिरने लगे, मानो हम किसी गहरी खाई में गिर रहे हों।

मेरी बड़ी बेटी मेरे पैरों के नीचे थी और चिल्ला रही थी "मम्मी, मैं यहां हूं, मम्मी, मैं यहां हूं"। मैंने उसे कहा कि "मैं तुम्हे वहां से निकालूंगी मेरी बच्ची, थोड़ा रुको"। लेकिन मैं अपनी गर्दन तक हिला नहीं पा रही थी क्योंकि मेरा पूरा शरीर दीवारों और घर के दूसरे सामान के बीच फंसा हुआ था।

मैंने अपने पति की आवाज सुनी, जो मेरा नाम पुकार रहे थे "माकीए, तुम कहां हो? माकीए....," और ऐसा लग रहा था कि वे हमें ढूंढते हुए यहां-वहां घूम रहे हैं। कुछ देर बाद मुझे गर्मी का अहसास होना शुरू हुआ। ऊपर मेरे पति लाचार होकर चिल्ला रहे थे, "आग की लपटें मेरे बहुत पास आ गई हैं, लेकिन अभी तक मुझे पता नहीं चल रहा है कि तुम कहां हो। यह जान लो कि हमें बचने की आशा छोड़नी होगी और उसी तरह मुझे तुम्हें भी खो देना पड़ेगा"।

"मैं यहां हूं, मैं यहां हूं"। मेरे बार बार पुकारने के बावजूद मेरे पति को पता नहीं लग पा रहा था कि मैं कहां हूं। जब मेरे पति कह रहे थे कि हमें बचने की आशा छोड़नी होगी, तब मैं अपनी छोटी बेटी के साथ मलबे में दबी हुई थी और मैंने उसे पागलों की तरह कसकर पकड़ रखा था। चूंकि अनजाने में मैंने उसकी नाक और मुंह को बंद कर रखा था, इसलिए वो सांस नहीं ले पा रही थी और चिल्ला रही थी।

उसकी चीख सुनकर मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ और मैं चिल्लाई "मेरी बच्ची मर रही है"! मेरे पति ने शायद मेरी आवाज सुनी और वापस आए। "तुम कहां हो, तुम कहां हो" चिल्लाते हुए वे हमें फिर से ढूंढने लगे। उन्होंने मलबा हटाकर पहले मुझे बाहर निकाला और फिर हमारी बेटी को। सिर में चोट के कारण चक्कर आने की वजह से मैं खड़ी नहीं हो पा रही थी। लेकिन धधकती हुई आग पास आती जा रही थी।

आग से निकलने के कुछ देर बाद मुझे ध्यान आया कि हमारी बड़ी बेटी हमारे साथ नहीं थी। मैंने अपने पति से पूछा कि वो कहां है। वे बोले, "कोशिश करना बेकार है। वो निकल नहीं पाएगी"।

"मुझे माफ कर दो। मुझे माफ कर दो। काजुको, मेरी बच्ची, कृपया हमें माफ कर दो"। मैं चली जा रही थी और अंदर ही अंदर अपनी बेटी से माफी मांग रही थी।

मेरे पति ने हमारी छोटी बेटी को एक हाथ से पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से मुझे पकड़ कर खींच रहे थे, ताकि हम उस आपदा से जल्दी बाहर निकल सकें। बीच-बीच में वो मुझे हौसला देते जा रहे थे "हिम्मत रखो, खुद को संभालो और चलती रहो। तुम कर सकती हो"। मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा रहा था, मैं मुश्किल से उनके साथ चल पा रही थी। हर दिशा से आ रही आग की लपटों ने हमारे घर को जलाकर राख कर दिया था।

अपने दोनों हाथों में मुझे और हमारी बेटी को पकड़े हुए मेरे पति को चलते हुए विश्राम करने के लिए बार-बार रूकना पड़ रहा था। उस आपदा से निकलते हुए रास्ते में एक महिला, जिसके बाल बिखरे हुए थे, मदद के लिए चिल्लाती हुई मेरे पति के पैरों में आकर गिर पड़ी और बोली "कृपया मेरी मदद कीजिए। मेरी बेटी एक खंभे के नीचे दब गई है। उसे निकालने में मेरी मदद कीजिए"। लेकिन मेरे पति ने उसकी विनती को अस्वीकार करते हुए कहा "काश मैं आपकी मदद कर पाता, लेकिन मेरी पत्नी और बच्ची की हालत बहुत नाजुक है, कृपया मुझे माफ करें"। इसके बाद वह तेज़ी से भाग गई। थोड़ा रुकते और थोड़ा चलते हुए हम अंततः शाम को मेरे पति के एक परिचित के यहां शिंजो पहुंचे।

● शिंजो में एक परिचित के घर

शिंजो में एक परिचित के घर पर हम 3 दिन रहे। अणु-बमबारी के सदमे की वजह से मैं अपनी बच्ची को दूध नहीं पिला पा रही थी। चूंकि पैर में हुए जख्मों की वजह से मुझे लेटे रहना पड़ता था, इसलिए

मेरे पति बाहर से दूध लेकर आते थे।

मैं कुछ नहीं कर सकती थी लेकिन फिर भी लगता था कि हमारी बड़ी बेटी, जो हमारे घर के मलबे में दब गई थी, शायद सुरक्षित हो। मैं अपने आंसू नहीं रोक पाई। इस बात को सोचते हुए मुझे खुद पर गुस्सा आया कि मैं, मदद के लिए चिल्ला रही अपनी बड़ी बेटी को पीछे छोड़कर बचकर निकल आई।

शिंजो में परिचित के घर मैंने कई लोगों को देखा, जिनके शरीर पर जलने के गंभीर घाव थे। मैं उन लोगों को देख नहीं पाती थी। उन्हें देखना न पड़े, इसलिए मैं अपनी आंखें बंद कर लेती थी।

● यामागुची में अपने माता-पिता के घर

अणु-बमबारी के तीन दिन बाद रेल सेवाएं बहाल हुईं। तब मेरे पति, छोटी बेटी और मैं योकोगावा स्टेशन से कोगुशी (योमागुची प्रांत), जहां मेरे माता-पिता का घर था, जाने वाली एक खचाखच भरी हुई ट्रेन में बैठे । हम कोगुशी में माता-पिता के घर पैदल पहुंचे। रास्ते में लोग हमारे दयनीय रूप को देखकर एक दूसरे से पूछ रहे थे, "इन्हें क्या हुआ है और यह सब क्या हो रहा है?" वह बहुत छोटा शहर था और वहां सभी हमें जानते थे। मैं मौन थी, रोते हुए वहां से गुजरी और अंततः माता-पिता के घर पहुंची।

उस रात के बाद हर रात मैं बहुत मुश्किल से सो पाती थी। मेरे अंदर यह आत्मग्लानि थी कि अपनी बड़ी बेटी को पीछे छोड़कर मैं बच निकली थी। मुझे इस परेशानी में देखकर मेरी बड़ी बहन और मेरी मां यह सोचकर मेरे पास ही सोने लगे कि कहीं मैं आत्महत्या न कर लूं। हालांकि मैं हर रोज आधी रात को चुपके से बिस्तर से उठकर बाहर जाकर रोती रहती थी। यह कहकर कि "मुझे माफ कर दो, इस स्वार्थी मां को माफ कर दो"। यामागुची में रहने के दौरान मेरे पति मेरी बड़ी बेटी की अस्थियों की तलाश में वापस हिरोशिमा गए।

मुझे अभी भी दूध नहीं आ रहा था इसलिए मेरी मां मेरी छोटी बेटी के लिए दूध लाने के लिए अभी-अभी मां बनी अन्य औरतों के यहां जाया करती थीं। मेरी मां ने मुझसे कहा कि "तुम्हारे पैर अभी ठीक नहीं हैं और तुम्हारी एक बच्ची भी है। इसलिए घर जाने से पहले तुम पूरा आराम करो"। उसके बाद लगभग एक साल तक मैं अपने माता-पिता के यहां रही। आज भी मेरा एक पैर खराब है।

● हमारी छोटी बेटी की मौत

यामागुची में एक साल रहने के बाद मैं वापस हिरोशिमा आ गई। हम योकोगावा में अपने पुराने घर

के पास ही किराए के मकान में रहने लगे।

मेरे पति ने मुझसे कहा कि एक दिन वो हमारी बेटी को सार्वजनिक स्नानागार में स्नान कराने ले गए थे जहां एक आदमी ने हमारी बेटी को देखकर मेरे पति को बताया कि उसकी पीठ पर थोड़ी सूजन दिखाई दे रही है। मैं उसे अस्पताल लेकर गई, मुझे लगा शायद अणु-बमबारी में उसकी पीठ पर चोट लगी होगी। जांच के बाद पता चला कि उसकी रीढ़ की हड्डी के चार हिस्सों में पस जमा हो गया है। मैंने अपने माता-पिता से उसकी देखभाल उनके घर यामागुची में करने के लिए कहा। कुछ साल बाद हमारी बेटी को हमारी याद आने लगी इसलिए हम उसे हिरोशिमा वापस ले आए और अस्पताल में भर्ती कराया। लेकिन अस्पताल का खर्च उठाना हमारे लिए मुश्किल हो रहा था। मुझे अपने माता-पिता से वो खर्च उठाने के लिए कहना पड़ा। बाद में हम अपनी बेटी को घर ले आए। लेकिन तमाम कोशिशों के बाद भी 1952 में उसकी मौत हो गई।

- **शांति के लिए प्रार्थना**

मैं अब और युद्ध नहीं चाहती। मैं एक ऐसी दुनिया की कामना करती हूं, जहां हर कोई एक दूसरे के साथ रहे। हम सभी खुश रहेंगे, यदि हम अपना हर दिन दूसरे लोगों का ख़्याल रखते हुए गुजारें।

मौत से बाल-बाल बचा

जिरो शिमासाकी

● **6 अगस्त**

उन दिनों मुझे मिनामी-कानोनमाची में मित्सुबिशि हैवी इंडस्ट्रीज़ हिरोशिमा मशीनरी वर्क्स जाने में एक घंटे से भी अधिक समय लगता था। मैं सैजो से ट्रेन पकड़ता था और छात्र संगठन के अपने काम के लिए ट्रामवे जाता था। हम पांच भाई-बहनों में, मैं चौथी संतान था। एक बड़ा भाई, दो बड़ी बहनें, मैं और एक छोटी बहन। मेरा भाई फौज में क्यूशू में तैनात था।

जब मैं हिरोशिमा प्रांत के हिरोशिमा सेकंड मिडिल स्कूल में द्वितीय वर्ष में था, तो सभी कक्षाएं रद्द कर दी गईं थी और मुझे लगातार एक फैक्टरी से दूसरी फैक्टरी में भेजा जा रहा था। वर्ष 1944 के अंत से मैं मित्सुबिशि की कानोन फैक्टरी में जाने लगा।

6 अगस्त को मैंने और मेरे कुछ दोस्तों ने फैक्टरी के रास्ते में ही विकिरण का अनुभव किया। मुझे लगता है वह स्थान मिनामी-कानोनमाची में खेल मैदान के आस-पास था, जो विस्फोट के केंद्र से लगभग 4 किमी दूर था। मैंने जो ट्रेन पकड़ी थी, यदि मैंने उसके बाद वाली ट्रेन पकड़ी होती तो मैं उस ट्रेन में अणु-बमबारी के सीधे प्रभाव के कारण मारा गया होता। इस तरह वाकई मैं मरने से बाल-बाल बच गया था।

अणु-बमबारी के समय मेरी पीठ पर एक आग का गोला लगा था। मुझे आज भी याद है मेरी गर्दन जल रही थी। बाद में भीषण विस्फोट के बाद मैं ज़मीन पर गिरकर बेहोश हो गया। 5 मिनट बाद मैंने आंखे खोलीं। चारों ओर देखने पर पता चला कि विस्फोट के केंद्र से 4 किमी की दूरी पर होने के बावजूद फैक्टरी का केवल कुछ ढांचा ही बाकी बचा था और उसकी छत उड़ चुकी थी।

आखिरकार हुआ क्या था? मुझे लगा कि जिस फैक्टरी में मुझे काम पर लगाया गया था, उस पर बी-29 बमवर्षक विमान के जरिए बम गिराया गया है। लेकिन नहीं, वह मिनामी-माची में गैस टैंक का विस्फोट होगा या हो सकता है उस पर भी बी-29 बमवर्षक विमान से बम गिराया गया हो। मेरे दोस्तों के विचार भी इस बारे में अलग-अलग थे। मुझे पक्का यकीन था कि यलो अलर्ट रद्द कर दिया गया है। सुबह सवा आठ बजे कोई भी अलर्ट पर नहीं था। सुबह आठ बजे से पहले एक रेड अलर्ट जारी किया गया था। उसे बाद में यलो अलर्ट में बदला गया और फिर सुबह लगभग आठ बजकर पांच मिनट पर उसे रद्द कर दिया गया था। मैं सकारात्मक सोच रहा था, मैंने अलर्ट रद्द किए जाने का सायरन भी सुना था।

उसके बाद एक निर्देश जारी किया गया: "पूरे शहर में आग फैल गई है, यहां से सभी लोग अपने घर लौट जाएं"। फिर हम लोग काली बारिश में भीगते हुए पूर्व दिशा की ओर आगे बढ़े। मेरे घर के रास्ते में हिजियामा की ओर मियूकी पुल पार करने से पहले मैंने एबा, योशिजिमा और सेंदा को पार किया। पुल पार करते समय कई लोग मुझसे मेरे पैर खींचकर पानी मांग रहे थे "मुझे पानी दो, मुझे पानी दो"। लेकिन मुझे लगा कि वे सिर्फ घायल हैं। मुझे नहीं मालूम था कि उनके जख्मों और जलने के घावों की असली वजह क्या है। मैं उन लोगों की ऐसी याचना सुनकर डर गया था "सुनो, मुझे पानी दो, मुझे पानी दो। मैं जख्मी हूं और मुझे प्यास लगी है... "सौभाग्य से विस्फोट की वजह से मुझे कोई जख्म नहीं हुआ था। मेरे पास वहां से निकलने के अलावा कोई रास्ता नहीं था, उन ज़ख्मी लोगों की नजरों को देखकर में पूरी तरह चकरा गया था।

जब में माउंट हिजियामा के तराई वाले क्षेत्र से गुजर रहा था, तब मैंने लाल रंग में लिपटे एक सैनिक को देखा। वो आज भी मेरी यादों में ताजा है। उसकी खाल उसके शरीर से लटक रही थी। वो सांस ले रहा था, लेकिन उसके शरीर की दशा बिल्कुल बिगड़ चुकी थी। मुझे देखकर उसने एक लाश की ओर इशारा करते हुए कहा कि "मुझे इसे गाड़ी में लेकर जाना है। क्या तुम पैर की तरफ से पकड़ोगे?" मैं डर की वजह से ऐसा नहीं कर सका। माउंट हिजियामा की तराई के आस-पास वाले क्षेत्र में लोग इतने गंभीर रूप से घायल नहीं हुए थे क्योंकि सौभाग्य से वह स्थान विस्फोट के केंद्र से दूर था। उनमें से कई लोग लाशें उठाने में सैनिकों की मदद कर रहे थे। वह सैनिक कुछ दिनों बाद मर गया होगा।

मुझे सही समय याद नहीं, लेकिन आख़िरकार लगभग आधी रात को मैं काइता में एक स्टेशन पर पहुंचा। मुझे पता था कि साइजो के लिए एक ट्रेन काइता से आधी रात को निकलती है । मैंने उस ट्रेन का एक घंटे से ज्यादा देर तक इंतजार किया। खचाखच भरी ट्रेन में, मैं साइजो पहुंचा, अंधेरे के कारण मैं स्टेशन पर मिलने आए लोगों को पहचान नहीं पा रहा था क्योंकि उस समय ब्लैकआउट नीति के तहत लागों को बिजली चालू करने की अनुमति नहीं थी और मैं नहीं जानता था कि मुझे लेने कौन आया है, इसलिए मुझे सिर्फ स्वागत ध्वनियां सुननीं पड़ रहीं थीं, "अवश्य ही आपको बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा होगा, मैंने सुना है कि वह सब कितना भयानक था"।

● *7* अगस्त और उसके बाद के हालात

माउंट हिजियामा में काम करते वक्त मेरे अंकल ने अणु-बमबारी विस्फोट का शिकार हुए थे इसलिए

अंकल की तलाश में मैं और मेरी आंटी हिरोशिमा गए। हम वहां कैसे पहुंचे, यह तो मुझे याद नहीं है, लेकिन शायद हम किसी ट्रक में वहां पहुंचे थे। हम वहां 7 अगस्त को पहुंचे क्योंकि हमें यह जानकारी मिली थी कि अंकल उजीना में कहीं हैं। तीन साल तक हिरोशिमा सेकंड मिडिल स्कूल में जाते रहने के कारण मुझे शहर का नक्शा अच्छी तरह से पता था। इसीलिए मैं आंटी के साथ उनका पथप्रदर्शक बनकर आया था।

मेरे अंकल हमें उजीना के किसी स्थान पर मिले। मुझे याद है कि वो एक गोदाम था, जो बंदरगाह के पास था। मैंने देखा कि वहां पर कुछ सैनिक शवों को बरामदे में रख रहे थे। कुछ सैनिक कह रहे थे, "यह आदमी मर चुका है। इसे बरामदे में रखा जाना चाहिए"। एक सैनिक ने मुझसे कहा "यह व्यक्ति मर चुका है, क्या तुम इसका सिर पकड़ोगे?" मैं इतना डरा हुआ था कि उसकी मदद नहीं कर सका। कुछ लोग मिलकर लाशों को बरामदे में रख रहे थे। उनमें एक 20 साल की लड़की भी थी, जो बुरी तरह जल चुकी थी।

यद्यपि हम अंकल को उजीना से साइजो लेकर आए, लेकिन घर वापस आने के तीन दिन बाद ही 10 अगस्त को उनकी मृत्यु हो गई। उनका दाह संस्कार हमारे घर के पास ही किया गया था। मैं वहां मदद के लिए मौजूद था। मेरी आंटी की मृत्यु दो साल पहले हुई। अंकल उनके साथ सिर्फ 9 साल ही रहे।

● अणु बमबारी के बाद की जिंदगी

यह शायद अक्टूबर या नवंबर की बात है, जब हिरोशिमा सेकंड मिडिल स्कूल की कक्षाएं शुरू हो गई थीं। मुझे याद है हमने केनोन में पुराने हिरोशिमा सेकंड मिडिल स्कूल के स्थान पर एक झोपड़ी बनाई थी। जब बर्फ गिरती थी तो हम कक्षा में बिना हीटर के सर्दी से कांपते हुए बैठते थे। वह बिना कांच वाली खिड़कियों की एक इमारत थी। केनोन में स्कूल को फिर से स्थापित करने से पहले वे काइता में किसी कन्या विद्यालय या प्राथमिक विद्यालय का भवन, जो टूटा नहीं था, उधार लेकर उसमें कक्षाएं ले रहे थे।

चूंकि मैं हाई स्कूल में जाना चाहता था, इसलिए आवश्यक क्रेडिट प्राप्त करने हेतु मेरे लिए कक्षा में जाना जरूरी था। इसलिए मैं सर्दी को सहते हुए भी कक्षा में जा रहा था। मैं उनका आभारी था कि एक झोपड़ी में भी उन्होंने कक्षाएं ली। वह पुरानी प्रणाली के तहत चलने वाला मिडिल स्कूल था इसलिए मैं 1947 में पांच साल में ग्रेजुएट हो गया था। मिडिल स्कूल से ग्रेजुएट करने के बाद मैं सेंडा-माची के हिरोशिमा

इंडस्ट्रियल कॉलेज में गया।

इंडस्ट्रियल कॉलेज से ग्रेजुएट होने के बाद, 1955 से 1964 के दशक में मैं एक ड्राइविंग स्कूल खालेने के बारे में सोच रहा था क्योंकि ऑटोमोबाइल्स धीरे-धीरे पूरे विश्व में प्रचलित होते जा रहे थे। मैंने कुछ परिचितों के साथ ड्राइविंग कोर्स शुरू किया। इंडस्ट्रियल कॉलेज में की गई पढ़ाई के कारण मुझे आधारभूत ज्ञान था और जिसके कारण मुझे व्यवहारिक कौशल के प्रशिक्षक के रूप में मान्यता मिली थी। 1960 से मैं शहर के एक ड्राइविंग स्कूल में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में काम कर रहा था।

1966 में, मैंने ड्राइविंग स्कूल छोड़ दिया। चूंकि मेरे भाई ने मुझे एक नर्सिंग होम और अन्य संस्थान चलाने में उनकी मदद करने के लिए कहा था इसलिए मैं उसके व्यवसाय में मदद करने लगा। मुझे अपने भाई पर गर्व है, जिसने मेडिकल असोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया। हम दोनों मिलकर व्यवसाय चला रहे थे कि अचानक ब्रेन हैमरेज के कारण मेरे भाई की मौत हो गई। दु:ख और निराशा के कारण मैं तीन दिनों तक सो नहीं सका। वह मियाजिमा और यूकी में यात्राएं किया करता था। चूंकि वह अस्पताल का प्रबंधक था, इसलिए लंबी यात्राओं के दौरान मैं उसका ड्राइवर हुआ करता था। मैं उसका सहयोग यह सोचकर करता था कि उसके लिए ड्राइव करना मेरा मिशन है। एक ओर जहां मेरे भाई का जीवन सीखने के प्रति समर्पित था, वहीं दूसरी ओर मैं एक एथलीट था। हम एक ही उद्देश्य के लिए साथ मिलकर काम कर रहे थे। अपने भाई को खोना मेरे लिए एक वज्रपात की तरह था।

● नौकरी, शादी और उत्तर प्रभाव

मैं और मेरी पत्नी हमारी शादी की पचासवीं सालगिरह बहुत जल्दी ही मनाने वाले हैं। जब हमारी शादी हुई थी, मैंने उससे यह बात छिपाने की कोशिश की थी कि मैं अणु-बमबारी का शिकार हुआ था। हालांकि मैं यह बात अच्छी तरह जानता था कि अणु-बमबारी के शिकार लोगों के साथ भेदभाव होता है, फिर भी बाद में मैंने अपनी पत्नी से यह कहने का साहस किया कि "मैंने अणु बमबारी को देखा है, लेकिन ग्राउंड ज़ीरो से 5 किमी की दूरी पर मिनामी-केनोन के छोर से, जहां मैं मित्सुबिशि के लिए काम कर रहा था। इसलिए मुझे कोई घाव नहीं हुए थे और मैं ठीक था"। मुझे लगा कि मेरी पत्नी को इस बात से कोई परेशानी नहीं थी कि मैं अणु-बमबारी का शिकार हुआ था। मेरा बेटा, जो एक जानकार दवा-विक्रेता है, इस बात को जानता है कि वह अणु-बमबारी का शिकार हुए लोगों की दूसरी-पीढ़ी से है। जब हमारा बेटा और बेटी पैदा हुए, तो मैं बहुत चिंतित था। मैंने जांच करवाई थी कि उनमें कोई असामान्य बात

तो नहीं है।

अणु बमबारी के 10 साल बाद उत्तर-प्रभाव के रूप में मुझे महसूस हुआ कि मेरी गर्दन के पीछे सूजन थी। वह असाध्य नहीं थी, लेकिन वो बहुत बड़ी सूजन थी, जैसे किसी नए अंग का निर्माण हो। वह उस हिस्से में थी, जहां मुझे आग का वह गोला लगा था, जो अणु-बमबारी के समय मेरे पीछे से आया था। मैंने उसे निकालने के लिए सर्जरी करवाई, लेकिन 10 वर्ष बाद वहां फिर सूजन आ गई। उसके बाद से मुझे और कोई सूजन नहीं आई। अणु-बमबारी का दूसरा प्रभाव यह था कि मेरे दांत समय से पहले ही खराब हो गए। अणु-बमबारी के शिकार कुछ लोगों को बाल झड़ने की समस्या का सामना भी करना पड़ा। अणु-बमबारी के उत्तर-प्रभाव अलग-अलग लोगों पर अलग-अलग थे। मेरे बाल नहीं झड़ रहे थे। अणु-बमबारी के शिकार लोग आमतौर पर जल्दी थक जाते थे। जब मैं नौकरी करता था, तब मेरे बॉस अक्सर मुझ पर शक किया करते थे कि मैं सुस्त हूं क्योंकि मैं अन्य लोगों की अपेक्षा जल्दी थक जाता था। मेरे बॉस ने यह कहते हुए मुझे फटकार भी लगाई थी, "और लोग तो इतने काम से नहीं थकते, तुम थका हुआ महसूस करते हो क्योंकि तुम सुस्त हो"। नौकरी में रहते हुए जल्दी थक जाना आपके लिए बहुत परेशानी पैदा करने वाला होता है।

● शांति के लिए प्रार्थना

अणु-बमबारी और शांति के बारे में आने वाली पीढ़ी को समझाने से पहले मुझे लगता है कि बोलने वालों को थोड़ी सूक्ष्मदृष्टि का इस्तेमाल करने की जरूरत है। अणु-बमबारी के समय पलक झपकते ही इमारतें धराशाही हो गईं और लोग मारे गए, इस तरह की चीज़ों को बताते समय आपको रचनात्मक होना पड़ेगा। केवल बार-बार यह कहते रहने से कि "वो बहुत भयानक था" या यह कहने से कि "मुझे अफसोस है कि मैं उन लोगों को पानी नहीं पिला सका, जो उसके लिए तरस रहे थे। मैं ब्रिज के नीचे से आ रही आग की लपटों से बचकर भाग निकला", इससे कुछ भी समझाया नहीं जा सकता। सिर्फ यह कहने से कि "हमने हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क में एक पीस मेमोरियल म्यूज़ियम बनाया है। कृपया यहां आएं। यहां शांति वृक्ष लगाए गए हैं" इससे भी वास्तव में अणु बमबारी का वह नृशंस और क्रूर रूप सामने नहीं आता है। इस तरह की बातों से लोगों को लग सकता है कि अणु-बमबारी कोई बड़ी बात नहीं थी। हाल ही में हाक्काइदो में आए तूफान ने कई लोगों से उनकी ज़िंदगी छीन ली। एक वीडियो में तूफान के परिणामस्वरूप हुए प्रभाव की तस्वीर अणु-बमबारी के समान ही है। वह एक विचित्र और

वास्तविक तस्वीर थी। एक छोटा बच्चा भी उस आपदा के वास्तविक पहलू को समझने में सक्षम होगा। अणु-बमबारी में इमारतें गिरीं और आग में जलकर राख हो गईं और इसी तरह दो लाख लोग मारे गए। इसलिए वास्तविक विनाश के वीडियो ही अणु बमबारी के असली रूप को सामने ला सकेंगे।

अणु-बमबारी के तुरंत बाद माइनिचि समाचार पत्र और असाही समाचार पत्र के फोटोग्राफर हिरोशिमा गए और आपदा के दृश्यों के फोटो लिए। कई बार युद्ध स्थलों की तस्वीरें ले चुके इन फोटोग्राफरों ने इतना भयानक विनाश किसी भी युद्ध क्षेत्र में नहीं देखा था, जितना अणु-बमबारी के कारण हिरोशिमा में हुआ था। तो फिर बताइए कि इस त्रासदी को कैसे व्यक्त किया जाए? मुझे लगता है इसे समझाने के लिए एक सूक्ष्मदृष्टि ज़रूरी है।

एक बात और, मैं हिरोशिमा सेकंड मिडिल स्कूल में था और मैंने अपने से छोटी कक्षा में पढ़ने वाले कई साथी छात्रों को अणु-बमबारी में खोया। बचे हुए मेरे कुछ सहपाठियों की अभी हाल ही में मृत्यु हुई। मेरे इकलौते भाई की मौत से मैं आज भी बहुत अकेला महसूस करता हूं। आज मैं शारीरिक रूप से अक्षम हूं और मेरी पत्नी मेरी देखभाल करती है। मैं और दो साल जिंदा रहना चाहता हूं। मुझे आशा है कि मैं कम से कम दो साल और ज़िंदा रह सकता हूं। अगर मैं अपने अंतिम बचे हुए कुछ सालों तक हफ्ते में एक बार या दो हफ्तों में एक बार युवा पीढ़ी, छोटे बच्चों और प्राथमिक स्कूल के छात्रों को यह बता सकूं कि मेरे साथ क्या हुआ था तो मुझे बहुत खुशी होगी।

अणु-बमबारी पर मेरे अनुभव

त्सूनेमात्सू तानाका

● उन दिनों की जिंदगी

उन दिनों, मैं 31 साल का था और कोमाची में चुगोकू हाइदेन कॉर्पोरेशन (वर्तमान में चूगोकू इलेक्ट्रिक पावर कंपनी) में काम करता था। मैं ओटेमाची में अपनी पत्नी मिकी और दो बच्चों (तीन साल का बेटा और सात महीने की बेटी) के साथ किराए के मकान में रहता था। ओनोमिचि मिडिल स्कूल से ग्रेजुएट करने के बाद मैंने चुगोकू हाइदेन में नौकरी शुरू की और मुझे फरवरी 1934 में ड्राइविंग लायसेंस मिल गया, मैं तब 20 या 21 साल का था। जब मैं चुगोकू हाइदेन में था, तब मुझे दो बार नियुक्त किया गया था। पहली बार सितंबर 1937 से जनवरी 1941 तक और दूसरी बार सितंबर 1942 से नवंबर 1943 तक। पहली बार मेरी नियुक्ति ड्राफ्टी के रूप में और अगली बार कर्मचारी के रूप में हुई।

मार्च 1945 के अंतिम दिनों में हुई भयानक बमबारी के बाद, मैंने लड़ाकू विमानों को पतंगों के झुंड की तरह उड़ते हुए देखा। वहां पर जमीन के नीचे एक हवाई-छापामार स्थान था। जो शायद पहले वहां रहने वालों ने खोदा होगा। जब भी हवाई-छापामारी होती थी, मैं उस बंकर में छिप जाता था। लेकिन अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ इस स्थिति का सामना करना मुश्किल होता था। एक बच्चे पर ध्यान दो, तो दूसरा बंकर से निकलने की कोशिश करने लगता था। मैंने निर्णय लिया कि ऐसे और नहीं चलेगा और मार्च के अंत में अपनी पत्नी और बच्चों को अपनी पत्नी के माता-पिता के घर फुतामी के वादा शहर के मुकोएता प्रांत में भेज दिया, (जो आज मुकोएता-माची, मियोशी कहलाता है)। चूंकि उस समय युद्ध जारी था, इसलिए मैंने अपने घर का सारा सामान अपनी कंपनी के गोदाम में रख दिया था और परिवार को बिना सामान के ही भेजा था।

घर खाली करने के बाद मैं अस्थाई रूप से गोदाम में रहने लगा। लेकिन मई की शुरुआत में जब मैं अपनी पत्नी के माता-पिता के घर से दो दिन की छुट्टी के बाद लौटा, तो मैंने पाया कि गोदाम पर हुई बमबारी के कारण मेरा सारा सामान जलकर राख हो चुका था। मेरे पास बदलने के लिए कपड़े भी नहीं थे इसलिए मैं अपनी पत्नी के पास वादा शहर गया। उसने मुझे युकाता से पैंट और शर्ट बनाकर दी। चूंकि मेरा अस्थाई निवास नष्ट हो चुका था, इसलिए मैंने अपने सहकर्मी के जरिए उशिता-माची में एक मकान किराए पर लिया और अणु बमबारी तक वहां रहा।

● अणु बमबारी के समय की स्थिति

उन दिनों जब रात में रेड अलर्ट जारी किया जाता था, तब मुझे म्युनिसिपल ऑफिस के आदेशानुसार

काम के कपड़ों में रात की निगरानी पर तैनात रहना पड़ता था। इस आदेश को "कॉल्स फॉर गार्ड्स" कहा जाता था। यह ड्यूटी भूतपूर्व सैनिकों को दी गई थी। 5 अगस्त की रात को जब रेड अलर्ट जारी किया गया, तब मैं रात की निगरानी पर अपनी नियुक्ति के स्थान यानागि पुल गया था। सामान्यत: रात की निगरानी के दूसरे दिन का काम सुबह आधा घंटे देरी से शुरू होता था, लेकिन उस दिन मुझे देरी से काम शुरू होने की कोई सूचना नहीं मिली। इसलिए मैं 6 अगस्त को सुबह 8 बजे कंपनी के दफ्तर पहुंचा, जिसे मैं रात की निगरानी वाले दिन के बाद से अपने ज़िंदा होने के लिए जिम्मेदार मानता हूं।

काम शुरू करने से पहले मेरे पास आधा घंटा था, इसलिए मैं स्टाफ के लोगों के लिए अलग से बनाए गए भूमिगत बाथरूम में जाकर रात की निगरानी के दौरान पहने गए कपड़े धोने लगा। जैसे ही मैं कपड़े धोने के लिए झुका, एक विस्फोट के प्रहार से पीछे की ओर धकेल दिया गया जो एक आग के गोले की तरह मेरे सामने से आया था और फिर पीछे की दीवार से टकराकर बेहोश हो गया। मुझे उस आग के गोले के अलावा कुछ भी याद नहीं है। जब मैं होश में आया, तो सबकुछ धूलमय हो गया था, कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन जब मैंने चौथी और पांचवी मंजिल पर आग की लपटे देखीं तो मुझे लगा कि कुछ करना चाहिए। मैं अपनी नाक के आगे कुछ भी नहीं देख पा रहा था, मैंने अंधेरे में अपनी याद्दाश्त की मदद से रास्ता टटोला। कई बार मैं आगे जाते हुए चीज़ों से टकराया, अंदाज़ा लगाते हुए कि शायद वहां सीढ़ियां हों, अंतत: मैं सुरक्षा गार्ड के ऑफिस तक पहुंचा। वहां से मैं ट्राम स्ट्रीट देख पा रहा था। जब मैं वहां पहुंचा तो देखा कि एक ट्राम कार एक घर के ऊपर गिरी पड़ी है। तब मैंने सोचा कि जरूर कोई गंभीर मामला है। वहां मुझे यह बताने के लिए कोई नहीं था कि मैं कहां जाऊं।

हालांकि, हिरोशिमा प्रांत के हिरोशिमा फर्स्ट मिडिल स्कूल में, जो मेरी कंपनी के दक्षिण में था, हमारे रहने की व्यवस्था की गई थी, लेकिन मुझे इस बारे में पता नहीं था। मैं ट्राम स्ट्रीट पर उत्तर की ओर आगे बढ़ा, शिराकामिशा मंदिर के ठीक पहले दाईं ओर मुड़ा और फिर ताकीया-चो सड़क पर पूर्व में जाने लगा। मेरे रास्ते में मुझे हिरोशिमा प्रांत के हिरोशिमा फर्स्ट वुमेंस हाई स्कूल में एक औरत (अज्ञात आयु) दिखाई दी। वो विस्फोट के कारण नष्ट हुई चारदीवारी के नीचे दब गई थी। वो मदद के लिए चिल्ला रही थी। उसका केवल सिर ही दिखाई दे रहा था। दुर्भाग्यवश, मैं ही बड़ी मुश्किल से उस आपदा से बच पाया था, मेरी पीठ में कांच के टुकड़े चुभ जाने के कारण वहां से खून निकल रहा था इसलिए मैं उसकी कोई मदद नहीं कर पाया और वहां से निकल गया।

उसके बाद मैं ताकिया नदी के पास से होते हुए मियूकि ब्रिज की ओर दक्षिण में बढ़ा। ताकिया नदी

एक छोटे नाले की तरह थी और हिरोशिमा के नक्शे में कहीं भी दिखाई नहीं देती थी। वह फुकुया के नीचे से बहती थी। चूंकि मैं बचकर भाग रहा था, इसलिए मैंने भागते हुए और लोगों को नहीं देखा। ताकिया नदी के उस पार बने घरों में रहने वाले लोग मलबा हटाते हुए कह रहे थे, "यह वाकई बहुत गंभीर है"। मुझे पता नहीं था कि उस वक्त घड़ी में कितने बज रहे थे, लेकिन काफी समय गुजर गया था।

मियूकि ब्रिज पार करने से पहले एक सैनिक ट्रक मेरे करीब आया। ड्राइवर ने मुझे उजीना बंदरगाह तक पहुंचाया। वहां से मैं जहाज़ से निनोशिमा आइलैंड पहुंचा। आइलैंड पर स्थिति ठीक नहीं थी क्योंकि कई घायलों ने वहां शरण ली हुई थी। वहां कुछ चिकित्सक थे, लेकिन मुझे कोई अच्छा इलाज नहीं मिल पाया। कांच के टुकड़े अभी भी मेरी पीठ में चुभे हुए थे। लोगों के शोर के कारण मैं सो नहीं सका। वे पागलों की तरह चिल्ला रहे थे। जब रात में सब सोते थे, तब भी कुछ लोग भागते रहते थे तो लोग उन्हें डांटते थे। मैंने 6 अगस्त को कुछ नहीं खाया। 7 अगस्त की सुबह मुझे एक बांस के डिब्बे में थोड़ा दलिया और साथ में अचार दिया गया। निनोशिमा में खाने के लिए सिर्फ यही था।

आइलैंड में स्थिति ऐसी थी कि मैंने मरने के डर से एक सैनिक से कहा कि मुझे वापस अपने घर जाने दिया जाए और मैं 7 अगस्त को जहाज से वापस उजीना बंदरगाह आ गया। सौभाग्य से मुझे एक ट्रक दिखाई दिया, मैंने उसके ड्राइवर से पूछा कि वो कहां जा रहा है। वो सिटी हॉल की तरफ जा रहा था। मैंने उससे मुझे वहां तक छोड़ने के लिए कहा और वो मान गया। उसने मुझे सामने के प्रवेश द्वार पर छोड़ा। मैं उसे धन्यवाद देकर उतर गया। मेरी कंपनी सिटी हॉल के उत्तर में थोड़ी दूरी पर ही थी। मैं वहां तक पैदल गया। जब मैं अपनी कंपनी में पहुंचा, तो वहां रिसेप्शन डेस्क पर दो कर्मचारी थे। मैंने उनसे कहा, "अब मैं अपनी पत्नी के माता-पिता के घर, मियोशी जाना चाहता हूं" और उन्हें वहां का पता दिया। उसके बाद मैं कमिया-चो और हाछोबोरी होता हुआ उशिता शहर में बोर्डिंग हाउस पहुंचा। मैं वहां रात भर रुका और 8 अगस्त को हेसाका स्टेशन से वादा शहर के लिए ट्रैन पकड़ी जहां मैंने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ा था। मैं जल्दी-जल्दी अपनी पत्नी के माता-पिता के घर पहुंचा। मैं सोच रहा था कि वो मेरे बारे में चिंतित होगी। रास्ते में क्या हो रहा था, यह तो मुझे याद नहीं, सिर्फ कोहेई पुल पर लाशों के उस ढेर की गहरी छाप अभी तक मेरे दिमाग में है।

● अणु बमबारी के बाद की स्थिति

जब मैं वादा शहर में आया तो कांच के टुकड़े अभी भी मेरी पीठ में चुभे हुए थे। मेरी पत्नी रोज नदी

पर मेरी पीठ को धोया करती थी। मेरी पीठ पर खून जमा हो गया था और वो कोलतार की तरह मेरी पीठ से चिपक गया था। जब मेरी पत्नी सुई से खून के थक्के निकालती थी, तो कांच के टुकड़े खून के थक्कों के साथ निकलते थे। उसने एक सप्ताह या शायद दस दिनों तक मेरी पीठ से खून के थक्के और कांच के टुकड़े निकाले। मुझे लगा कि वे सारे निकल गए हैं, लेकिन मेरी पीठ में बचे हुए कांच के टुकड़ों के साथ मवाद बाकी था, जिसका अनुभव मुझे तीस सालों तक होता रहा। मैं कांच के सभी टुकड़ों को निकलवाने के लिए सकाई-माची के सर्जिकल हॉस्पिटल में गया।

वाडा शहर आने के कुछ दिनों बाद मेरे पिताजी ओनोमिची से मुझे देखने आए थे। चूंकि अणु-बमबारी के कारण मैं अपने परिजनों से संपर्क नहीं कर पाया था, तो मेरे पिता को लगा कि शायद मैं मर चुका हूं और इसलिए वो यह जानने वादा आए थे कि मेरा अंतिम संस्कार कहां किया गया है। जब उन्हें पता चला कि मैं जिंदा हूं, तो वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और खुश भी। वे जल्दी ही सिर्फ चाय पीकर वापस ओनोमिची चले गए।

वाडा शहर में, मैं अपने अंगों में बिना किसी असामान्य लक्षण के अच्छा महसूस कर रहा था। तीन हफ्ते के आराम के बाद मैं अगस्त के अंत या सितंबर की शुरुआत में वापस हिरोशिमा लौटा और काम पर गया।

काम पर वापस आने के कुछ समय बाद मेरी आंत से खून आने लगा। वह सितंबर माह के बीच का समय था क्योंकि मुझे याद है कि उस समय पेड़ों से अखरोट गिरने लगे थे। मैं ओनोमिची में अपने माता-पिता के घर गया और वहां मेरी देखभाल हुई। मेरी स्थिति को देखते हुए सभी को, यहां तक कि मेरे डॉक्टर को भी, लगा कि मुझे पेचिश हुआ है, वे सोच रहे थे कि अन्य लोगों को संक्रमण से बचाने के लिए मुझे दूर रखा जाना चाहिए। लेकिन मेरी बहन के बनाए हुए अखरोट के चावल खाकर मेरा खून आना बंद हो गया। यह एक चमत्कार की तरह था, लेकिन मेरा विश्वास है कि मेरी बहन के बनाए हुए अखरोट के चावल मेरी बीमारी के लिए अनुकूल आहार साबित हुए। ओनोमिची में कई दिनों के अच्छे आराम और खान-पान के बाद मेरे पेट की स्थिति सामान्य हो गई। इसलिए मैं वापस हिरोशिमा अपने काम पर लौट गया।

● युद्ध समाप्त होने के बाद की जिंदगी

जब मैं काम पर वापस आया तो मेरे स्टाफ के कई लोग ऐसे थे, जिनके घर नष्ट हो गए थे। मैं इन

लोगों के साथ कंपनी की पांचवी मंजिल पर रह रहा था। पहले हमें अपने खाने का इंतजाम खुद करना पड़ता था, लेकिन बाद में कंपनी ने हमारे लिए रसोइया रखवा दिया था।

चूंकि मैं ड्राइव कर सकता था, इसलिए मुझे सामान्य मामलों के सामग्री विभाग के ट्रक ड्राइवर के रूप में रखा गया था और मैं हिरोशिमा प्रांत के सभी विद्युत संयंत्रों सामाग्री पहुंचाता था।

1946 में मेरा परिवार वापस हिरोशिमा आ गया और मेरे साथ रहने लगा। अपना काम खत्म करने के बाद मेरे सहकर्मी मेरे लिए एनोमाची में एक घर बनाने का काम किया करते थे। उसके बाद एनोमाची में हम 30 साल रहे।

कई समस्याओं के बावजूद हमें खाना मिल जाता था। मेरी पत्नी के माता-पिता भी कुछ मदद करते थे। लेकिन हमारे पास कपड़े और बिस्तर नहीं थे क्योंकि वो मेरी कंपनी के गोदाम में जलकर नष्ट हो गए थे। हमने सब कुछ फिर से शुरू किया, लेकिन हम पूरी तरह से लोगों की दया पर ही जिंदा थे। मैंने कपड़े युकाता से खुद बनाए और बिस्तर ओनोमिची में अपने माता-पिता के यहां से मंगवाए थे।

● स्वास्थ्य

जुलाई 1947 में, हमारी दूसरी बेटी का जन्म हुआ। फिर से मुझे चिंता हुई कि कहीं वो अणु-बमबारी से प्रभावित तो नहीं है। मैं कई बार उसकी नाक से खून बहते हुए या और भी कुछ अलग देखता था, जो उसकी उम्र के अन्य बच्चों से अलग था। इसका कारण मुझे लगा कि उस पर भी अणु बमबारी का प्रभाव है।

1956 में मुझे पता चला कि मुझे ट्यूबरक्यूलोमा हुआ है, जो एक तरह का ट्यूमर होता है। मेरे शरीर में सफेद कोशिकाओं की संख्या घटकर 2000 और फिर 1000 हो गई थी, जो निम्नतर स्तर होता है। मेरा वजन आठ किलो कम हो गया। पहले मेरा वजन 65 किलो था। जुलाई 1956 से सितंबर 1957 तक मैं हारा, हात्सुकाइची-माची (वर्तमान में हात्सुकाइची शहर) के एक अस्पताल में भर्ती था और 2 सालों तक मैं काम से भी दूर रहा। 7 जुलाई को जब मैं अस्पताल में भर्ती हुआ, उस दिन तानाबाता त्योहार भी था। मेरी बेटी ने उस दिन सुबह मुझसे नाश्ते के समय कहा कि "आज आसमान में दो तारे मिलने वाले हैं, लेकिन वो अलग भी हो जाएंगे"। यह सुनकर हम सब रोने लगे।

उसके बाद से, मैं स्वस्थ रूप से जीता रहा और अगले 10 सालों तक मुझे कोई गंभीर बीमारी नहीं हुई। बहुत साल पहले मुझे फिर से वही रक्त-स्राव शुरू हुआ। जब-जब मुझे इसके लक्षण दिखाई देते थे,

तब-तब मैं रक्त-स्राव बंद होने तक रेड क्रॉस हॉस्पिटल में भर्ती रहता था।

चार साल पहले जब मेरी प्रोस्टैट कैंसर की सर्जरी हुई, तब मुझे अणु-बम का शिकार व्यक्ति होने संबंधी एक प्रमाणपत्र मिला।

● वर्तमान विचार

मैं अभी 94 वर्ष का हूं, और मैं इस बात के लिए शुक्रगुज़ार हूं कि मैं इतने लंबे समय तक जी सका। मैं आज जो कुछ भी हूं, उसके लिए मैं अपनी पत्नी का एहसानमंद हूं। मेरे बच्चों का व्यवहार मेरे प्रति बहुत अच्छा है। मेरे पास उन सभी लागों को धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं हैं जिन्होंने मेरे लिए इतना कुछ किया।

मां के प्रति मेरी भावनाएं

हिरोको कावागुची

● 6 अगस्त व उससे पूर्व की स्थिति

उस समय हमारे परिवार में चार लोग थे-मेरी मां, बड़ा भाई व बहन, और मैं। हम लोग कामितेन्मा-चो में रहा करते थे। मेरे पिता, तोशियो ओमोया, 1938 में चीन में युद्ध के दौरान शहीद हो गए। चूंकि मेरे पिता की मृत्यु के समय मैं एक छोटी-सी बच्ची थी, इसलिए मैं अपने पिता का चेहरा केवल उनके फोटो से ही पहचानती थी। मेरे परिवार के अनुसार, बचपन में, जब भी मैं अपने पिता के फोटो देखती, तो मैं कहा करती थी, "मेरे पिता फोटो से बाहर नहीं आ सकते क्योंकि कोई भी उनके लकड़ी के खड़ाउं लेकर नहीं गया"।

मेरी मां शिजुको ने अकेले ही हम सभी का पालन-पोषण किया। अन्य सभी अभिभावकों की तुलना में वह अधिक शिक्षा-प्रवृत्त मां थी। हालांकि वह युद्ध का दौर था, लेकिन फिर भी उसने मुझे सुलेखन व बैले-नृत्य सीखने की अनुमति दी। जब मेरे भैया ने मिडिल स्कूल की प्रवेश परीक्षा दी, तो उस परीक्षा में उनकी सफलता की प्रार्थना के लिए मां रोज सुबह मंदिर जाया करती थी। शायद वह सोचती थी कि उसके पति की मृत्यु के बाद केवल शिक्षा ही एक ऐसी वस्तु है, जो वह अपने बच्चों को दे सकती है।

उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए, मेरी मां एक साथ कई काम करते हुए सुबह से रात तक कड़ी मेहनत किया करती थी। मुझे याद है कि सुबह जब वह अखबार बांटने जाया करती थी, तो भैया और दीदी उसकी सहायता किया करते थे। हालांकि मैं छोटी थी, लेकिन फिर भी मैं उनके साथ चलने की कोशिश करती थी।

चूंकि उन दिनों हर कोई अपने पड़ोसियों के साथ भी अपने रिश्तेदारों जैसा ही व्यवहार किया करता था, इसलिए जब मेरी मां हर रोज कार्य में व्यस्त होती, तो हम बच्चों की देखभाल हमारे आस-पास के लोग करते थे।, मेरे चाचा जी का परिवार हमारे पड़ोस में रहता था और मेरे दादाजी का परिवार पास के एक शहर, हिरोस-मोटोमाची में, रहता था।

उस समय, कई प्राइमरी स्कूलों को सामूहिक रूप से उनके स्थान से हटाया जा रहा था। साथ ही विद्यार्थियों को भी ग्रामीण-क्षेत्रों में रहने वाले उनके रिश्तेदारों के घरों से ले जाया जा रहा था। मैं तेन्मा प्राइमरी स्कूल में तीसरे-वर्ष की छात्रा थी, और मैं भी अपनी दीदी सुमिवे के साथ, जो कि उसी विद्यालय में छठे वर्ष की छात्रा थी, एक मंदिर में रहने चली गई। हालांकि मेरी मां और भैया तोशियुकी कोई न कोई उपहार, जैसे आलू, लेकर हमसे मिलने आया करते थे, लेकिन इसके बावजूद दीदी की और मेरी उम्र इतनी कम

थी कि अपने माता-पिता के बिना जीना हमारे लिए बहुत कठिन था। चूंकि मेरी मां ने मुझे बताया कि यदि हमें मरना पड़ा, तो हम सभी एक साथ मरेंगे, इसलिए मैंने अपनी मां से कहा कि वह मुझे घर ले जाए और मैं कमितेन्मा-चो के अपने घर में लौट आई। संभव है कि यदि मैं निष्कासन-स्थल पर रूक जाती, तो शायद हम सभी बच जाते क्योंकि अणु-बमबारी के दौरान मेरी मां और भाई हमसे मिलने आए होते।

● 6 अगस्त की स्थिति

चूंकि 6 अगस्त के दिन हमारे स्कूल में छुट्टी थी, इसलिए मैं अपने मित्रों के साथ पड़ोस में गई थी।

आसमान में धुआं उड़ाते बी-29 विमानों को देखते ही मैंने तुरंत अपने दोनों हाथों से अपनी आंखें और कान बंद कर लिए। शायद ऐसा मैंने अचेतन रूप से किया था क्योंकि हमें ऐसा करने का प्रशिक्षण दिया गया था। इसलिए मैंने प्रकाश का संकेत नहीं देखा क्योंकि मेरी आंखें ढंकी हुई थीं।

सौभाग्य से अणु-बमबारी के समय मैं एक घर के छज्जे के नीचे, एक दीवार की दूसरी ओर सुरक्षित थी, इसलिए न तो मुझे कोई चोट आई और न ही गर्मी का अहसास हुआ। मेरी सहेली के सिर पर हल्की-सी चोट ही आई थी, इसलिए हम खुद ही एक दरार में से रेंगते हुए उस मकान से बाहर निकले और घर लौट आए।

जब मैं घर पहुंची, तो मेरी मां, जो कि अणु-बमबारी से घायल हो चुकी थी, मेरा इंतज़ार कर रही थी। उस दिन, मेरी मां राशन की दुकान से चावल लेने बाहर गई थी और घर लौटते समय उसे अणु-बमबारी का सामना करना पड़ा था। जैसे ही मैं घर पहुंची, उसने झपटकर प्राथमिक-चिकित्सा का थैला लिया और अपने साथ मुझे लेकर विनाश से बचने के लिए भाग निकली।

आस-पास देखने पर, मुझे ढह चुके घर और एक पुल की जलती हुई रेलिंग दिखाई दी। हमने वह पुल पार किया और कोइ नगर की ओर बढ़े। रास्ते में, पूरी तरह जलकर काले हो चुके एक व्यक्ति ने" मुझे थोड़ा पानी दे दो, कृपया मुझे थोड़ा पानी दे दो", कहते हुए हमसे सहायता की मांग की। लेकिन हमें बचकर भागने की इतनी जल्दी थी कि हम उसके लिए कुछ न कर सके। मुझे आज भी इस बात का अफसोस है कि मैंने उसका नाम तक नहीं पूछा।

अंततः जब हम कोइ प्राइमरी स्कूल पहुंचे, तब मुझे अहसास हुआ कि मैं नंगे पैर थी। मुझे आश्चर्य

हुआ कि मलबे से होकर दौड़ने के बावजूद मुझे कोई चोट क्यों नहीं लगी थी।

कक्षाओं और बरामदों सहित स्कूल का प्रत्येक स्थान घायलों से भरा हुआ था। मैंने वहां अपनी मां का उपचार करवाया। मेरी मां के हाथ, पैर व पीठ गंभीर रूप से जल गए थे, और उसका चेहरा भी थोड़ा जल गया था, तथा उसके सिर में एक बड़ा गड्ढा बन गया था। मेरी मां का उपचार केवल थोड़ा-सा मरहम लगाने तक ही सीमित था। आज उस बात को याद करने पर, मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकती कि मेरी मां के शरीर पर सचमुच कोई मरहम लगाया भी गया था या नहीं।

उसके बाद, मेरी मां और मैं हमारे शहर की दिशा में ओगावाची-माची में बने एक निर्दिष्ट शरण-स्थल की ओर बढ़े। जब हम इस पनाहगाह में पहुंचे, तो आसमान से काली वर्षा शुरु हो गई। मैंने पास ही पड़ी धातु की एक चादर उठाई, और हमने खुद को उसके नीचे छिपाकर उस वर्षा से अपनी रक्षा की। वर्षा रूकने के कुछ समय बाद मेरे भैया तोशियुकी भी वहां आ गए।

उस दौरान, मेरे भैया मात्सुमोटो औद्योगिक विद्यालय में द्वितीय-वर्ष के छात्र थे, और उन्हें उजिना के तट से दूर कानावाजिमा द्वीप पर बने एक कारखाने में लामबंद किया गया था। उनके अनुसार, हालांकि अपने लामबंदी-स्थल की ओर जाते समय मियुकी पुल के पास अपने मित्रों के साथ उन्होंने खुद अणु-बमबारी का सामना किया था, लेकिन इसके बावजूद वे उस स्थान की ओर जाने के बजाय हम लोगों की चिंता के कारण पीछे मुड़े और वापस घर लौट आए। हिरोशिमा विद्युत रेल के मुख्यालय के आस-पास दोनों तरफ आग लगी होने के कारण सड़क पार कर पाना संभव नहीं था, इसलिए वे शुदो माध्यमिक विद्यालय की ओर आगे बढ़े, नाव से मोटोयासु व ओटा नदियां पार कीं, एक पुल पार किया और अंततः कानोन-माची पहुंचे। घर लौटते समय, हालांकि किसी ने उनसे एक किंडरगार्टन इमारत के मलबे के नीचे दबे एक अन्य व्यक्ति की सहायता करने का अनुरोध किया था, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। वे जल्दी में थे क्योंकि वे यथाशीघ्र यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उनका परिवार सुरक्षित है। उन्होंने बताया कि उन्हें उन लोगों की स्थिति को देखकर दुःख हुआ था।

जब वे घर पहुंचे, तो लपटें लगभग हमारे घर तक पहुंचने लगी थीं। उन्होंने बाद में मुझे बताया कि पानी से भरी एक बाल्टी की मदद से उन्होंने तुरंत ही उन लपटों को बुझाया। इसके बाद यह देखने पर कि घर में कोई नहीं था, वे हमारी खोज में ओगावाची-माची की ओर बढ़े। आखिरकार हम लोग ओगावाची-माची में फिर एक साथ मिल पाने में सफल हुए।

मेरी मां के अनुसार, 6 तारीख को सुबह दीदी ने उनसे कहा कि वह स्कूल नहीं जाना चाहती। लेकिन मेरी मां ने इस आशा से उसे स्कूल भेजा ताकि आगे चलकर वह यामानाका कन्या हाईस्कूल में प्रवेश पा सके। रोज की तरह उस दिन भी मेरी मां ने दीदी को स्कूल छोड़ा, लेकिन दीदी कभी घर नहीं लौटी।

● 7 तारीख के बाद की स्थिति

मेरे भैया अणु-बमबारी के अगले दिन मेरी दीदी, जो कि अभी तक घर नहीं लौटी थी, की खोज में तेन्मा प्राथमिक शाला गए। यह जानने पर कि अणु-बमबारी के समय वह प्राचार्य के कार्यालय की सफाई कर रही थी, भैया ने कार्यालय के आस-पास उसकी खोज की, लेकिन उन्हें मलबे में कुछ भी नहीं मिला। स्कूल की इमारत पूरी तरह ढह चुकी थी और सब-कुछ जलकर ख़ाक हो चुका था।

मेरी मां, भैया और मैं कुछ दिनों तक ओगावाची-माची की पनाहगाह में रहे। लेकिन मेरी मां मेरी बहन के लिए इतनी अधिक चिंतित थी कि हमने घर लौटने का फैसला किया।

हमारे घर लौटने के बाद से ही मेरी मां बीमारी के कारण बिस्तर पर ही थी। कोइ प्राइमरी स्कूल में उसके घावों पर लगाए गए मरहम के अलावा उसे कोई उपचार नहीं मिल सका था।

चूंकि सौभाग्य से हमारा घर आग से सुरक्षित बच गया था, इसलिए हमारे पड़ोसियों ने भी हमारे पूरे बिस्तर का उपयोग करना शुरु कर दिया था। इस स्थिति की जानकारी मिलने पर, मेरी चाची सुयेको ओमोया ने नाराज होकर हमसे कहा, "ये क्या बात है? तुम लोग सदभावनापूर्वक अपना बिस्तर दूसरे लोगों को दे देते हो और अपनी मां को कुछ नहीं ओढ़ाते, ऐसा क्यों"? चूंकि मेरा भाई एक औद्योगिक विद्यालय में केवल द्वितीय वर्ष का एक छात्र था और मैं एक प्राइमरी स्कूल में केवल तीसरे वर्ष की छात्रा थी, जिनका संयोजन मिलकर आज केवल एक जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थी और एलीमेंट्री स्कूल के विद्यार्थी के बराबर होगा, इसलिए वास्तव में हम इस समस्या से अच्छी तरह निपटने के लिए कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं थे। जब मेरी चाची हमारे घर आई, तो उन्होंने ही मेरी मां की और हमारी देखभाल की। मेरी चाची के घर में, उनके पति, मेरे पिता के छोटे भाई, शीगेओ जो कि यामागुची में एक सैन्य टुकड़ी में तैनात किए गए थे, अणु-बमबारी के दो दिनों बाद ही इसलिए हिरोशिमा के अपने घर लौटे क्योंकि उनकी पत्नी और पुत्री नोब्यु हिरोशिमा में थे। यदि मेरे चाचा और चाची न होते तो केवल बच्चों और बीमार मां के हमारे परिवार को बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ता।

हालांकि मेरी मां इस बात से खुश थी कि उनके जले हुए चेहरे के घाव जल्दी ही ठीक हो गए थे, लेकिन गंभीर रूप से जल चुकी उनकी पीठ के घाव ठीक होने वाले नहीं थे। अचानक उनकी पीठ की त्वचा पूरी तरह उतर गई, जबकि मैं ये समझ रही थी कि घाव ठीक हो रहे हैं क्योंकि त्वचा सूख रही थी। उनकी त्वचा के नीचे कीड़ों का झुण्ड लगा हुआ था। जब तक मैं यह बात जान पाती, उससे पहले ही इन कीड़ों के झुण्ड वहां बड़ी संख्या में जमा हो चुके थे और मेरी मां की पीठ इन कीड़ों से पूरी तरह भर चुकी थी। उन्हें पूरी तरह निकाल फेंकना असंभव था। जब मेरे भाई ने और मैंने अपनी मां के पास सोना शुरू किया, जो कि एक मच्छरदानी के भीतर सोया करती थी, तो मैं उन कीड़ों की तेज गंध को नजरअंदाज नहीं कर पाती थी।

अपनी गंभीर चोटों के बावजूद, मेरी मां ने कभी ये नहीं कहा कि" यह दर्दनाक है", या" मुझे बहुत खुजली हो रही है", और न ही वे कभी पानी के लिए तरसीं। चूंकि वे हमेशा प्रार्थना किया करतीं थीं कि" मैं आड़ू खाना चाहती हूं। मैं आड़ू खाना चाहती हूं"।, इसलिए मेरी चाची कुछ आड़ू खरीदने इगुची गई। मेरा अनुमान है कि वह अवश्य ही बहुत प्यासी रही होंगी।

4 सितंबर की सुबह, मेरी मां चल बसी। मुझे मां की मौत का अहसास तब हुआ, जब चाची ने मुझे बताया," हिरोको !तुम्हारी मां की मौत हो चुकी है"। तब तक मुझे और भैया को सचमुच ही इस बात का अहसास नहीं हुआ था। पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे आश्चर्य होता है कि सिर फूट जाने के कारण लगी गंभीर चोट के बावजूद भी वो एक माह तक कैसे जीवित बची रह सकी। जब घायलों को हटाने के लिए सैनिक उन्हें एक ट्रक में भर रहे थे, तब मेरी मां ने किसी भी हाल में तब तक घर छोड़ने से मना कर दिया, जब तक कि उन्हें ये पता न चल जाए कि मेरी दीदी कहां थी। एक व्यक्ति को मेरी मां की तरह ही गंभीर जख्म हुए थे और उपनगरों में हुए उपचार के बाद वह ठीक हो गया। मेरी लापता दीदी के लिए चिंतित मेरी मां केवल इस आशा पर जीती रही कि वह दीदी को फिर एक बार देख सकेगी।

मां की मृत्यु के दिन ही हमने कोसीकान के श्मशान घाट में उनका अंतिम संस्कार किया। लेकिन मेरे मन में दुःख की कोई भावना या आंसू नहीं उमड़े। शायद मेरी भावनाएं पहले ही सुन्न हो चुकी थीं। उस दिन वर्षा हो रही थी, और मेरी मां का शरीर इतनी जल्दी जलकर राख में नहीं बदलने वाला था।

शहर में इमारतें ढह गईं थीं और पूरा क्षेत्र एक जला हुआ मैदान बन गया था। अपने घर से हम हिरोशिमा स्टेशन और निनोशिमा को देख सकते थे। हर तरफ लाशें बिखरी हुई थीं। सैनिकों ने नदी में बह रही

लाशों को निकालकर उनका अंतिम संस्कार किया। हालांकि कुछ लाशें एक माह से भी अधिक समय तक जमीन पर ही पड़ी रहीं, लेकिन वहां से गुजरते समय हम पर इस बात का ज़्यादा असर नहीं पड़ता था। चूंकि हमें अणु-बम के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था और उन दिनों हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं था, इसलिए हम विकिरण से दूषित खाद्य पदार्थ, जैसे दूसरों के खेतों में उगे आलू या प्रदूषित मिट्टी के नीचे दबा चावल बेझिझक खा लिया करते थे।

● अणु-बमबारी के बाद जीवन

मां की मौत के कुछ ही समय बाद हम लोग मिडोरी गांव की ओर चले गए, जहां हम अपने रिश्तेदारों पर आश्रित होकर रह सकते थे और हमने उनसे प्रार्थना की कि वे हमें अपने बाड़े में रहने दें। हमारे दादा-दादी पहले ही वहां आ चुके थे। अणु-बमबारी के समय, हमारे दादाजी तोमेकिची ओमोया और दादी मात्सुनो अपने घर के बैठक कक्ष में सुरक्षित थे। हालांकि, मिडोरी गांव में आने के बाद, हमारे स्वस्थ और सक्रिय दादाजी अचानक अस्वस्थ महसूस करने लगे और मां की मौत के पांच दिनों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। हमें अपने चाचा शोसो की कोई खबर नहीं मिली, जो कि हाइरोस-मोटोमाची में हमारे दादा-दादी के साथ रहा करते थे, जिन्होंने बताया था कि अणु-बमबारी के समय चाचाजी दरवाजे पर थे।

मिडोरी गांव में हम ऐसी कई बातों के चलते परेशान थे, जो कि हमारे जीवन के अब तक के अनुभवों से काफी अलग थीं। लगभग एक साल तक मिडोरी गांव के विद्यालय में जाने के बाद हम हिरोसे लौट आए। हम सभी ने मिलकर कुछ जमीन समतल की और एक झोपड़ी बनाकर रहने लगे। हमारे चाचाजी और चाची ने माता-पिता की तरह ही मेरा व मेरे भाई का पालन किया। इस तरह अपने माता-पिता की मौत के बाद भी मैंने खुद को कभी अकेला महसूस नहीं किया।

हालांकि, उम्र बढ़ते जाने पर मैं अपने माता-पिता की कमी महसूस करने लगी। जब मैं अपनी चचेरी बहन, जिसके साथ मेरा लालन-पालन किसी सगी बहन की तरह ही हुआ था, को प्राथमिक शाला से ही एक निजी शिक्षक से पढ़ते हुए देखती, तो मुझे उससे ईर्ष्या होती थी और मैं खुद को कुछ अकेला महसूस करती थी। अपनी शादी तक मैं चाचाजी के परिवार के साथ ही रही। चूंकि मेरे चाचाजी फर्नीचर के उत्पादक थे, इसलिए मैं वहां बही-खाते संभालने का काम किया करती थी।

● **विवाह और बीमारी**

उन दिनों, बहुत से लोग अणु-बम पीड़ित होने की बात को छिपाया करते थे। विशेषतः कई महिलाएं अणु-बम पीड़ितों की विवरण-पुस्तिकाओं के लिए भी आवेदन नहीं किया करती थीं, और इस तथ्य को छिपाती थीं कि वे अणु-बम पीड़ित हैं, ताकि उनका विवाह आसानी से हो सके। हालांकि आज मैं इस विवरण-पुस्तिका के लिए आभारी हूं, लेकिन मुझे भी इसके लिए आवेदन करने में कुछ समय लगा था। विवाह के बारे में, मेरा मानना था कि मैं उस व्यक्ति से शादी करूंगी, जिसे मेरी चाची और चाचाजी मेरे लिए चुनेंगे। अंततः मेरा विवाह पारंपरिक पद्धति से हुआ। सौभाग्य से मेरे पति को इस बात की चिंता नहीं थी कि मैं एक अणु-बम पीड़ित हूं।

विवाह के बाद मैं अपने होने वाले बच्चों के बारे में सोचकर चिंतित थी। मैं गले के कैंसर से पीड़ित हूं। मेरे भैया और चचेरी बहन भी कैंसर से पीड़ित हैं। मेरी बेटी श्रवण-नाड़ी के ट्युमर से ग्रस्त है। मैं नहीं जानती कि क्या मेरी बेटी की बीमारी को अणु-बमबारी से जोड़कर देखा जा सकता है।

● **शांति की कामना**

मैं अक्सर अपने बच्चों को अणु-बमबारी की अपनी कहानी सुनाती हूं। मैं उन्हें शांति स्मारक संग्रहालय (Peace Memorial Museum) भी ले गई और उन्हें अणु-बमबारी के समय की परिस्थिति के बारे में बताया।

हालांकि उन दिनों मैं इतनी अधिक व्यस्त थी कि मैं अपने परिवार के समाधि-स्थल पर भी नहीं जा पाती थी, लेकिन अब मैं अक्सर वहां जाती हूं और घर लौटने से पहले वहां मौजूद अन्य लोगों से कुछ देर बात भी करती हूं। यदि मेरी मां जीवित होती तो मैं उसे खुश करने की कोशिशें करतीं और यह बताती कि मुझे उसकी कितनी चिंता है। इसलिए जब भी मैं अपनी मां की उम्र के किसी व्यक्ति से मिलती हूं, तो उनके लिए कुछ न कुछ ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पाती हूं, जैसा कि मैंने अपनी मां के लिए किया होता।

अणु-बमबारी के शिकार हुए लोगों की बड़ी संख्या को देखते हुए मैं अपने स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति के लिए सचमुच आभारी हूं। साथ ही, जब भी अपनी मां को याद करती हूं तो सोचती हूं कि मुझे अपने बच्चों के लिए एक लंबा और सशक्त जीवन जीना है।

उस गर्मी की अविस्मरणीय घटना

चियोको शिमोताके

● युद्ध के दौरान जीवन

मेरा जन्म सन 1921 में हिरोशिमा प्रशासनिक प्रांत की यामागाता काउंटी में टोनोगा गांव (जिसका नाम बदलकर बाद में काके-चो कर दिया गया था और जिसका वर्तमान नाम अकिओता-चो है) में हुआ।

सन् 1940 या 1941 के आस-पास मैंने अपने माता-पिता का घर छोड़ दिया और सुत्सुगा गांव (वर्तमान अकिओता-चो) में रहने वाली शिष्टाचार की एक शिक्षिका, जो कि अपने कड़े निर्देशों के लिए प्रसिद्ध थीं, के घर में रहकर चाय समारोह, पुष्प-सज्जा और शिष्टाचार की शिक्षा प्राप्त की। यह मेरे भावी जीवन के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुआ। कुछ वर्षों बाद जब मेरी शिक्षिका की मृत्यु हो गई, तो सुत्सुगा गांव के शिक्षा अधीक्षक ने मुझसे कहा कि मैं शिक्षिका का पद स्वीकार करूं और छात्रों को पढ़ाऊं। गांव के लोगों द्वारा दिए जाने वाले अध्यापन शुल्क से मेरी आय होने लगी।

इस कार्य के माध्यम से मैं टोनोगा गांव के प्रधान के भतीजे हिसाशी कावामोटो के संपर्क में आई और मई 1944 में मैंने उनसे विवाह कर लिया। हमारा विवाह तो मानो पूर्व-निश्चित ही था क्योंकि मेरे पिता टोनोगा गांव के कार्यालय में कार्यरत थे और मेरे भावी पति से उनका व्यक्तिगत परिचय था। विवाह के बाद हम मेरे पति के माता-पिता (मेरे ससुर कमेसाबुरो और सास सेकियो) के साथ हिजियामा-होनमाची, हिरोशिमा सिटी में सुनामी पुल के पास रहने लगे। हालांकि मेरे पति घड़ियों का व्यापार किया करते थे, लेकिन इसे बंद करने के दबाव के कारण उन्हें यह व्यापार बंद करना पड़ा क्योंकि एक ही तरह का व्यापार करने वाली कई दुकानों की एक ही स्थान पर कोई आवश्यकता नहीं थी। युद्ध की कठिन परिस्थिति में यह आदेश जारी हुआ कि एक ही घर में दो पूर्णकालिक गृहिणियों की आवश्यकता नहीं है और महिलाओं को भी काम करने के लिए बाहर जाना चाहिए। इसलिए अपनी शादी के एक माह बाद मैं कासुमी-चो में सैन्य शस्त्रागार के लिए काम करने लगी, जहां मेरे ससुर जी भी काम किया करते थे।

● अणु-बमबारी से पूर्व

टोनोगा गांव ही मेरे सास-ससुर का भी गृहनगर था। मेरी सास 3 अगस्त से टोनोगा गांव जाने की योजना बना रही थी, लेकिन उस दिन सुबह अचानक उनका विचार बदल गया और उन्होंने मुझसे कहा, "तुम पहले चली जाओ। मैं वहां *ओबोन* के दौरान जाउंगी और लगभग 10 दिनों तक रूकूंगी"। इसलिए मैं 3 अगस्त से 5 अगस्त तक अपने मायके में रहने के लिए टोनोगा गांव चली गई। जब मैं सुनामी पुल को पार कर रही थी, तो मेरी सास भागते हुए मेरे पीछे आईं और एक छाता, जो कि अच्छी स्थिति

में था, देते हुए मुझसे कहा" इसे अपने माता-पिता के घर पर ही छोड़ देना क्योंकि यदि हम इसे हिरोशिमा में ही रखेंगे, तो हम नहीं कह सकते कि हवाई-हमलों के कारण इसका क्या होगा"। अपनी बात जारी रखते हुए उन्होंने कहा "अपने माता-पिता को मेरा नमस्कार कहना और 5 तारीख तक अवश्य लौट आना"। वे मेरी सास मां के अंतिम शब्द थे। जब मैं उनकी बात सुन रही थी, तो मुझे इस बात का जरा भी अंदाज़ा नहीं था कि ये मुझसे कहे गए उनके अंतिम शब्द थे। अपने माता-पिता के घर में रहने पर मैं हमेशा ही यह चाहती थी कि मैं वहां यथासंभव अधिक से अधिक समय तक रह सकूं और आराम कर सकूं, इसलिए मैंने 5 तारीख की रात को छूटने वाली आखिरी बस से घर लौटने का फैसला किया। लेकिन जब मैंने घर लौटने की कोशिश की, तो मुझे बस में चढ़ने नहीं दिया गया और मुझे वापस अपने माता-पिता के घर जाना पड़ा। जब मेरे पिता को इस बात का पता चला कि मैं वापस अपने घर नहीं गई हूं, तो उन्होंने मुझे डांटते हुए कहा, "वह व्यक्ति विफल है, जो अपना वादा नहीं निभा सकता। मैं श्री व श्रीमति कावामोटो से जितनी भी क्षमा याचना करूं, वह कम होगी "!उन्होंने कवामोटो परिवार को एक तार भेजकर यह संदेश भी दिया कि "मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि चियोको किसी भी स्थिति में कल घर पहुंच जाए"।

● 6 अगस्त से 9 अगस्त तक

अगले दिन (6 अगस्त को) मैं इस तथ्य के बावजूद भी अपने माता-पिता के घर में ही रुकी रही कि मैंने जिस दिन लौटने का वादा किया था, वह दिन पहले ही बीत चुका था और मुझे सुबह ही निकल जाना चाहिए था। हालांकि, यदि मैं उस दिन सुबह जल्दी निकल गई होती, तो मैं विस्फोट के केंद्र से बहुत ही कम दूरी पर अणु-बमबारी का शिकार हो गई होती। सुबह 8:15 का समय हुआ था। किसी वस्तु के चमकने के अहसास के बाद, एक तेज आवाज सुनाई दी, मानो भूकंप आ गया हो। कुछ समय बाद, कटे-फटे और झुलसे हुए कागज के अनगिनत टुकड़े हवा में उड़ते हुए हमारी ओर आ गए, जिन पर जापानी भाषा में "हिरोशिमा सिटी" लिखा हुआ था। यह देखकर, मैंने सोचा कि शायद हिरोशिमा में कुछ हुआ है। कुछ देर बाद हमें बताया गया कि शायद हिरोशिमा में कोई बहुत गंभीर घटना हुई है। मैंने हिरोशिमा लौटने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने कहा कि शहर की ओर जाने वाला रास्ता इस स्थिति में नहीं है कि महिलाएं और बच्चे पैदल चलकर उस रास्ते से जा सकें। इसलिए स्थिति की जांच करने के लिए पहले मेरे पिता पैदल हिरोशिमा सिटी गए। उनके अनुसार, पहले वे हिजीयामा होनमाची के एक घर में गए, जहां हम पहले रहा करते थे और उन्होंने देखा कि सब कुछ जलकर राख हो चुका है। राख के ढेर

में, उन्होंने एक संदेश-पट्ट दिखाई दिया, जिस पर लिखा था, "हम आर्सेनल में एक शयनगृह में जा रहे हैं"। वे वहां गए और मेरे पति व सास-ससुर से मिले। मेरी सासू-मां बुरी तरह जल चुकी थीं और मृत्यु-शैय्या पर थीं। मेरे पति और सास-ससुर की स्थिति की जानकारी लेने के बाद, मेरे पिता हिगाशी-हाकुशिमा-चो में मेरे चाचाजी को देखने गए। मेरे चाचाजी का घर पूरी तरह ढह चुका था और वे कोइ के आस-पास किसी स्थान पर चले गए थे। विद्यार्थियों की लामबंदी के अंतर्गत एक इमारत को ढहाते समय उनकी मौत हो चुकी थी।

पैदल घूमकर उस क्षेत्र की जांच करने के बाद, मेरे पिता टोनोगा गांव लौट आए। यह जानने पर कि मेरे पति और मेरा परिवार आर्सेनल के एक शयनगृह में था, मैंने 8 अगस्त की सुबह बस के बजाय रेलगाड़ी (काबे लाइन) से हिरोशिमा में प्रवेश किया। उस रास्ते पर मुझे काबे स्टेशन के सामने एक प्लाज़ा में पड़े अनेक घायल व्यक्ति दिखाई दिए, जिनकी सांसें बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। उनमें से हर एक के बिस्तर के पास सिर्फ एक कैन रखा था। यहां तक कि जब अपने परिजनों को ढूंढने आए लोग घायलों के चेहरे को देखकर अपने प्रियजनों का नाम पुकारते थे, तो उनमें से किसी में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह उत्तर दे सके। इतनी बड़ी संख्या में घायलों को देखकर मैं अपने परिवार के बारे में बहुत अधिक चिंतित हो गई थी।

मेरी रेलगाड़ी मिताकी स्टेशन के आस-पास के क्षेत्र में रूक गई और यात्रियों से उतर जाने को कहा गया। वहां से मैं आर्सेनल शयनगृह की ओर बढ़ी और मेरे पास आलूबुखारे का अचार व चावल जैसी चीज़ें थीं, जो कि मेरे माता-पिता ने मुझे दी थीं। हालांकि, मैं ये नहीं जानती थी कि दूर तक जले हुए मैदान पर मुझे किस दिशा में बढ़ना चाहिए। मैं पहले जिन संकेत-स्थलों के मिलने की उम्मीद कर रही थी, उन सभी के बिना ही मुझे आगे बढ़ना पड़ा। तब मुझे जलती हुई आग की लपटें दिखाई दीं। यह सोचकर कि उसके आस-पास शायद मुझे कोई मिल जाए, जिससे मैं अपना रास्ता पूछ सकूं, मैं उस आग के पास गई और मैंने पाया कि वह आग लाशों को जलाने के लिए लगाई गई थी। चाहे पुल पर हो, किसी सड़क के किनारे हो या चावल के खेत में हो, लगभग हर कहीं लाशें जलाई जा रहीं थीं। जलती हुई लाशों को देखने के बाद भी मुझे न तो कुछ महसूस हुआ और न ही मैंने उनकी गंध के बारे में कुछ सोचा। अवश्य ही मेरी भावनाएं सुन्न हो चुकी होंगी।

आखिरकार 9 तारीख को देर रात 3:00 बजे, मैं आर्सेनल के शयनगृह में पहुंच गई। हालांकि मेरी सास की मौत हो चुकी थी, लेकिन उनका शव अभी भी वहीं पड़ा था क्योंकि उनकी मृत्यु हुए अभी कुछ

ही घंटे बीते थे। चूंकि अणु-बमबारी के समय मेरी सास खेत में कटाई कर रही थीं, अतः उनका पूरा शरीर जल गया था, उनकी ठोड़ी और स्तन पूरी तरह जल चुके थे और वे बहुत ही भयानक स्थिति में थी। मेरे ससुर जी ने बताया कि जब मेरी सास के कराहने की आवाज़ें सुनाई देना बंद हो गईं, तो उन्होंने कुछ मोमबत्तियां जलाईं, जिनके प्रकाश में देखने पर उन्हें पता चला कि उनकी मौत हो चुकी है। अगले दिन, मेरे ससुरजी ने लकड़ी का एक डिब्बा बनाया, मेरी सास को उसमें रखा और डिब्बे को आलू के खेत में जला दिया।

● मेरे पति की मृत्यु

चूंकि मेरे पति घर पर ही थे, इसलिए वे आग से सुरक्षित बच गए थे और उनके शरीर पर चोट के कोई निशान भी नहीं थे। उन्होंने मुझे बताया कि खेत में काम कर रही मेरी सास की चीखें सुनकर वे उन्हें बचाने के लिए बाहर गए थे।

15 अगस्त को मैं सुबह 5:00 बजे जाग गई। हालांकि मेरे पति ने मुझसे कहा कि मुझे इतनी सुबह उठने की कोई जरूरत नहीं थी, लेकिन फिर भी मैंने अपनी सास की आत्मा को समर्पित करने के लिए मालपुआ बनाया क्योंकि यह उनकी मृत्यु के बाद सातवां दिन था-वह दिन, जब हमें उनकी याद में एक पूजा करनी थी। मैंने हम तीनों के लिए चावल की लपसी भी बनाई। जब मैंने अपने पति, जो कि तीन-तातामी-चटाइयों वाले एक कमरे में मेरे ससुरजी के साथ जमीन पर लेटे हुए थे, को चावल की लपसी खिलाने की कोशिश की, तो उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। इससे पहले कि मेरे ससुरजी को इस बात का अहसास होता, मेरे पति की मौत हो चुकी थी। चूंकि मेरे पति के शरीर पर अब मक्खियां भिनभिनाने लगीं थीं, इसलिए मैंने स्थानीय शासकीय कार्यालय में यह सूचना दी कि मेरे पति की मृत्यु 14 तारीख को हुई थी (जबकि वास्तव में उनका निधन 15 तारीख को हुआ था), ताकि यथाशीघ्र उनका अंतिम संस्कार किया जा सके, और उनकी मृत्यु के दिन ही उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया। मेरे ससुर जी ने एक बार फिर लकड़ी का एक बक्सा बनाया, जो कि इस बार मेरे पति के लिए था। मेरे पति को हमने उस बक्से में रखा और उसे जला दिया। चूंकि मेरी सास के अंतिम संस्कार के लिए आग जलाने का कार्य शायद मेरे ससुरजी के लिए इतना कठिन था कि वे उसे सह नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने मुझसे मेरे पति के अंतिम संस्कार का दायित्व निभाने को कहा। मैं नहीं चाहती थी कि जो व्यक्ति उस दिन सुबह तक सांसें ले रहा था, उसके शव को जलाने का कार्य मुझे करना पड़े, लेकिन यह मेरी ज़िम्मेदारी थी

इसलिए मैंने अग्नि प्रज्वलित की। लेकिन एक बार शव जलना शुरू हो जाने पर मैं वहां न रुक सकी। मैंने वहां से निकल जाने का प्रयास किया, लेकिन तब मुझे अहसास हुआ कि मेरे कदम लड़खड़ा रहे थे और मैं खड़ी रह पाने में असमर्थ थी। इसलिए मेरे पास रेंगते हुए घर जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। यहां-वहां जल रही लाशों के कारण मेरी हथेलियां, घुटने और पैर जल गए क्योंकि धरती अभी भी गर्म थी।

अगले दिन मैं अपने पति की अस्थियां लेने गई और मुझे आश्चर्य हुआ कि आसमान में उड़ रहे शत्रु के हवाई-जहाज़ों के बावजूद भी चेतावनी का संकेत क्यों नहीं दिया गया था। उस समय तक मुझे यह पता नहीं चला था कि युद्ध पहले ही खत्म हो चुका था।

● आत्महत्या करने के लिए साइनाइड

शस्त्रागार में सभी महिलाओं को साइनाइड दिया गया था। हमसे कहा गया था कि यदि अमरीकी सैनिक हमारे साथ बलात्कार करें, जो कि जापानियों के लिए शर्म की बात थी, तो हम उसे निगल लें। जब मेरे पति की मौत हुई, तो मैंने साइनाइड लेने की कोशिश की क्योंकि मैं ऐसा महसूस कर रही थी कि अब मेरे जीवन का कोई अर्थ नहीं है। जब मेरे ससुर जी मेरे पति की मौत की सूचना देने के लिए स्थानीय शासकीय कार्यालय गए थे, तो मैंने साइनाइड लेने के लिए पानी भी पी लिया था। लेकिन उसी क्षण मेरे मन में विचार आया कि घर लौटने पर जब मेरे ससुर जी को पता चलेगा कि मेरी भी मौत हो चुकी है, तो वे क्या सोचेंगे। इसलिए मैंने यह सोचकर साइनाइड न लेने का निर्णय किया कि मेरे पास मर जाने का विकल्प नहीं था और मेरा कर्तव्य था कि मैं अपने ससुर जी का ध्यान रखूं। मैंने अपने लंबे बाल कटवा लिए और उन्हें अपने पति की चिता में जलाते समय अपने पति की आत्मा से कहा, "मुझे माफ कर देना मेरे प्रियतम। मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। यह तुम्हारे प्रति मेरी भावनाएं हैं"। यदि मेरे ससुर जी न होते, तो मैंने साइनाइड खा लिया होता।

टोनोगा गांव लौटने के बाद भी मैंने साइनाइड को संभालकर रखा था। मेरे छोटे भाई को इस बात का पता चल गया और उसने उसे यह कहते हुए उसे जला दिया कि यदि वह मेरे पास रहा, तो मैं आत्महत्या कर सकती हूं। मेरे पास उस जलते हुए रसायन की गंध का वर्णन करने के लिए कोई शब्द नहीं थे।

● **मेरे ससुर जी की मृत्यु**

अणु-बमबारी के समय मेरे ससुर जी शस्त्रागार में थे और उनकी पीठ बुरी तरह जल गई थी। इस कारण उन्हें सोते समय हमेशा पेट के बल सोना पड़ता था। मेरे पति की मृत्यु के बाद, मैं अपने ससुर जी के साथ टोनोगा गांव जाने की योजना बना रही थी। लेकिन 25 अगस्त को उनकी मृत्यु हो गई। मेरी उम्र केवल 24 साल थी और अपने पति और सास-ससुर की मृत्यु के कारण मैं पूरी तरह अकेली पड़ गई थी। मुझे लगा कि यदि अब मेरी मौत भी हो जाए, तो मुझे कोई दुःख नहीं होगा। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकी क्योंकि मेरे मन में यह कर्तव्य-बोध था कि मुझे उन तीनों की राख मेरे सास-ससुर के गृहनगर ले जाकर वहां उनके परिवार को सौंपनी है।

● **टोनोगा गांव में वापसी**

अंततः अपने पति और सास-ससुर की राख अपने साथ लेकर मैं 6 सितंबर को टोनोगा गांव पहुंची। मेरे पति के संबंधियों ने उनके घर में मेरे परिवार के अंतिम संस्कार का आयोजन किया। चूंकि मैं बहुत दुबली-पतली थी और उन दिनों अस्वस्थ महसूस कर रही थी, इसलिए मेरे माता-पिता और भाई मेरी देखभाल करने के लिए वहां थे। उनके कारण ही मैं आज भी जीवित हूं। माता-पिता और भाइयों का होना सचमुच ही सौभाग्य की बात है। भोजन के प्रति उनकी रूचि इतनी अधिक संक्रामक थी कि उनके साथ मैं भी भोजन कर लिया करती थी। एक समय ऐसा भी था, जब हमारे पास हमेशा ही भोजन की कमी रहा करती थी, और आज सब कुछ है, लेकिन कुछ खाने की इच्छा ही नहीं रही।

टोनोगा गांव लौटने के बाद, मैं अपने पिता के साथ कई बार हिरोशिमा गई। एक दिन, एक विदेशी, जो कि युद्ध-बंदी रह चुका था, ने शहर में हमारा पीछा किया। हम उस क्षेत्र में घूमते-घूमते पहले ही पूरी तरह थक चुके थे, यहां तक कि हमने वह क्षेत्र भी पार किया, जहां माकुराज़ाकी तूफान के बाद कोई सड़कें नहीं बची थीं। हालांकि, तेज़ी से दौड़ते हुए हम उससे बचकर भाग निकलने में सफल रहे, लेकिन उस घटना के दौरान मैंने जो डर महसूस किया, उसे मैं आज तक नहीं भूल सकी हूं।

● **दूसरा विवाह**

सन 1957 में मैंने एक ऐसे व्यक्ति के साथ पुनः विवाह किया, जिसके तीन बच्चे थे और सबसे छोटे बच्चे की उम्र दो वर्ष थी। पहले पहल मैं इस विवाह-प्रस्ताव को अस्वीकार कर देने का इरादा रखती थी

क्योंकि मुझे बच्चों के पालन-पोषण का कोई अनुभव नहीं था। हालांकि, एक बार जब मैं उसके बच्चों से मिली, तो वे मुझे इतने प्यारे लगे कि मैंने अपना विचार बदल लिया और यह सोचकर उस व्यक्ति के साथ शादी करने का निर्णय लिया कि मैं उसके बच्चों का पालन करते हुए प्रसन्नता महसूस कर सकूंगी क्योंकि अब मेरी अपनी कोई संतान होने की आशा न के बराबर थी।

● स्वास्थ्य की स्थिति

ऐसे अनेक अवसर आए हैं जब मैं अपनी शारीरिक स्थिति को लेकर चिंतित रही। आजकल मुझे सभी प्रकार के चिकित्सकों से जांच करवानी पड़ती है। जब मैं अपना दांत निकलवाने के लिए किसी स्थानीय दंत-चिकित्सक के पास जाती हूं, तो वह मुझसे अपने साथ किसी चिकित्सक को लाने को कहता है क्योंकि सामान्यतः मेरे खून का बहाव रुकता नहीं है।

सन 2001 में लगभग 7 वर्षों पूर्व, गर्भाशय के कैंसर के उपचार के लिए मेरा ऑपरेशन किया गया। चूंकि मेरा कैंसर मेरी आंतों तक फैल चुका था, इसलिए इतना बड़ा ऑपरेशन था कि मेरी आंतों का 50 सेमी भाग भी हटा देना पड़ा। गर्भाशय का कैंसर एक ऐसी बीमारी है, जिसका उपचार कर पाना कठिन होता है और यह मेरी आंतों तक फैल चुका था। इसलिए मुझे आश्चर्य होता है कि मैं जीवित कैसे बची।

जब मैं गर्भाशय के कैंसर से पीड़ित थी, तो मुझे भोजन का स्वाद कड़वा महसूस होता था। पिछले दिनों मुझे फिर वैसा ही महसूस होने लगा था, इसलिए मैं परीक्षण करवाने के लिए एक अस्पताल में गई। अस्पताल में यह पता चला कि मेरी आंतों में रूकावट उत्पन्न हो गई है और मुझे अस्पताल में भर्ती होना पड़ा।

● अणु-बम विकिरण के साथ संपर्क

हालांकि, प्रत्यक्ष रूप से अणु-बम विकिरण के संपर्क में न आने के कारण मेरे शरीर का कोई अंग नहीं जला था, लेकिन फिर भी मक्खियों ने मेरे हाथों, पैरों और पीठ सहित पूरे शरीर पर अंडे देना शुरू कर दिया और अनगिनत कीड़े रेंगते हुए मेरी त्वचा से बाहर आने लगे। मुझे इतना तेज दर्द होता था, मानो किसी घुड़मक्खी ने मुझे काट लिया हो। उन कीड़ों द्वारा मेरी पीठ पर छोड़े गए निशान आज भी मौजूद हैं, इसलिए मैं गर्म पानी के झरनों सहित किसी भी सार्वजनिक स्नानागार में जाना पसंद नहीं करती।

अस्पताल के चिकित्सक जब मेरी पीठ को देखते हैं, तो मुझसे पूछते हैं कि मुझे क्या हुआ था। मैं उन्हें उत्तर देती हूं कि यह अणु-बमबारी के कारण हुआ है। कुछ चिकित्सक मुझसे यह भी पूछते हैं कि क्या अणु-बमबारी के समय मेरी पीठ खुली थी, लेकिन मैं उन्हें बताती हूं कि ऐसा नहीं था।

मेरा मानना है कि युद्ध नहीं होना चाहिए। शांति बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहां तक कि जब आपके घर में भी कोई समस्या हो, तो आप खुश नहीं रह सकते। अतः हमें खुद पर नियंत्रण रखना चाहिए, ताकि हमारे कारण कोई समस्याएं उत्पन्न न हों।

तुम भाग्यशाली हो

तोशिओ मियाची

● उन दिनों का जीवन

मेरा जन्म सन 1917 में नाकानोशो गांव, मित्सुगी काउंटी (वर्तमान में इनोशिमा-नाकानोशो-चो, ओनोमिची सिटी) में हुआ था। मेरे पिता नाकानोशो डाकघर में कार्यरत थे, जबकि मेरी मां, जो कि एक पूर्णकालिक गृहिणी थी, एक छोटे-से खेत में काम किया करती थी। तीन बेटियों के बाद जन्मे पहले पुत्र के रूप में मेरे जन्म के दो वर्ष बाद मेरे छोटे भाई का जन्म हुआ। सन 1924 में, मेरी छोटी बहन की मृत्यु उसके जन्म के कुछ ही समय बाद हो गई। उसके बाद, मेरी मां की भी मृत्यु हो गई। तब से मैं अपने पिता के साथ अकेला ही रहा।

सन 1939 में अनिवार्य भर्ती के तहत मुझे पांचवी डिवीजन, फील्ड आर्टिलरी, पांचवी रेजीमेंट में तैनात किया गया। एक स्क्वाड्रन लीडर के रूप में, मैं तीन वर्षों तक वियतनाम और चीन में अलग-अलग स्थानों पर घूमता रहा। सेवानिवृत्ति के बाद मैं मारुकाशी डिपार्टमेंट स्टोर की हिकारी शाखा में कार्य करने लगा, जिसे मेरा चचेरा भाई चलाया करता था। सन् 1943 में, मैंने अपनी नौकरी बदल ली और मेरे दादाजी द्वारा संचालित मियाजी उत्पादन कंपनी के हिकारी शाखा कार्यालय में कार्य करने लगा। नौकरी बदलने का कारण यह था कि इस नई कंपनी का मुख्यालय मेरे पिता के घर के पास ही था और इसलिए मैंने सोचा कि वहां कार्य करने पर अपने पिता का ध्यान रख पाना मेरे लिए सरल हो सकेगा। नौकरी बदलने के दौरान ही मेरा विवाह भी हुआ और अप्रैल 1944 में मेरे बड़े बेटे का जन्म हुआ।

अप्रैल 1945 में मुझे दूसरी बार अनिवार्य सैन्य-भर्ती का आदेश मिला। इस बार मैंने अपनी पत्नी और बच्चे को इनोशिमा भेज दिया। एक बार फिर मुझे फील्ड आर्टिलरी, पांचवी रेजीमेंट में जाने को कहा गया था, लेकिन इस बार मैंने सैन्य पंजिका रक्षक के रूप में रेजीमेंट के मुख्यालय में कार्य किया। चूंकि मुख्य टुकड़ियों को मुख्य-भूमि की रक्षा के लिए देश के विभिन्न स्थानों पर भेज दिया गया था, इसलिए मुख्यालय में रहने वाले सैनिकों की संख्या बहुत ही सीमित थी। इन सैनिकों में से, एक सैन्य पंजिका रक्षक के रूप में मेरा कार्य सैन्य पंजिका बनाना और सैन्य पुस्तिकाएं वितरित करना था। यहां तक कि मुझे सैन्य युद्धाभ्यास भी नहीं करना पड़ता था।

सार्जन्ट ओकादा, मेरे वरिष्ठ अधिकारी, जो कि कोबाटाके गांव, जिन्सेकी काउंटी (वर्तमान में जिन्सेकीकोगेन-चो-जिन्सेकी काउंटी) से थे, एक उत्कृष्ट व्यक्ति थे। चूंकि उस कमरे में सिर्फ हम दोनों ही काम किया करते थे, इसलिए वे मुझे बहुत पसंद करते थे।

जून 1945 में, मेरी टुकड़ी का नाम बदलकर चुगोकु मिल्ट्री डिस्ट्रिक्ट आर्टिलरी रिजर्व्स (चुगोकु 111वीं

इकाई) कर दिया गया। हमारी टुकड़ी हिरोशिमा महल की बाईं ओर थी। एक खंदक के चारों ओर अनेक दो-मंजिला सैन्य बैरक बनाए गए थे और चार तोपखाना इकाइयां तैनात की गई थीं।

● अणु-बमबारी के पूर्व की स्थिति

सैन्य-सेवा से मुक्त किए जाने के बाद, मेरा इरादा वापस लौटकर अपने पिछले कार्यालय में कार्य करने का था। ऐसा प्रतीत होता था कि मेरी कंपनी ने भी मेरे लिए यही योजना बनाई थी। उसके अध्यक्ष की ओर से तोपखाना इकाई को एक पत्र भेजा गया था, जिसमें मुझसे यह पूछा गया था कि क्या मैं एक महत्त्वपूर्ण बैठक में शामिल होने के लिए हिकारी सिटी आ सकता हूं। हालांकि, मैं बाहर जाने की अनुमति मांगने में झिझक रहा था क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मेरे साथी यह सोचें कि मैंने व्यापार के बहाने अपना स्टेशन छोड़ दिया था क्योंकि मेरे पिछले कार्यालय के संचालक मेरे रिश्तेदार थे। मैं इसी दुविधा की स्थिति में था, जब सार्जन्ट ओकादा ने सौजन्यतापूर्वक मुझसे कहा, "चिंता मत करो। मैं तुम्हारे लिए अनुमति ले आऊंगा"। मैं उनका आभारी हूं कि मुझे बाहर जाने की विशेष अनुमति मिल गई और मैं 5 अगस्त (रविवार) की सुबह मैं हिकारी सिटी पहुंचा। यह अनुमति इस शर्त पर दी गई थी कि मैं अगली सुबह 6 अगस्त (सोमवार) को हिरोशिमा स्टेशन पर सुबह 9:00 बजे आने वाली रेल पकड़कर अपनी यूनिट में लौट आऊंगा।

6 अगस्त को मैं सुबह 4:00 बजे उठा और नाश्ते के बाद हिकारी स्टेशन से एक रेल पकड़ी। मुझे लगता है कि सुबह 8:15 बजे, अणु-बमबारी के समय, मेरी रेल इवाकुनी स्टेशन पहुंचने ही वाली थी। चूंकि रेलगाड़ी की तेज आवाज के कारण मुझे बाहर का शोर सुन पाना कठिन था, इसलिए मैं विस्फोट की आवाज नहीं सुन सका। लेकिन सभी यात्री खिड़कियों से अपनी दाईं ओर (रेलगाड़ी की दिशा में) देखकर कह रहे थे, "विज्ञापन के गुब्बारे जैसा धुएं का एक बहुत बड़ा बादल हिरोशिमा के आकाश में उमड़ रहा है"। किसी भी घोषणा के बिना, क्योंकि कोई भी ये नहीं जानता था कि आखिर हो क्या रहा है, मेरी रेल ने आगे बढ़ना जारी रखा और आखिरकार वह इत्सुकाइची स्टेशन पर आकर रूक गई। स्टेशन पर जहां हमसे पहले वाली रेलगाड़ियां भी रूकी हुई थीं, सभी यात्रियों से उतर जाने को कहा गया क्योंकि हम हिरोशिमा की दिशा में और आगे नहीं जा सकते थे। यह मेरे लिए हानिकारक था क्योंकि मैंने सुबह 9:00 बजे हिरोशिमा पहुंचकर यथाशीघ्र अपनी यूनिट में लौटने का वचन दिया था।

इत्सुकाइची स्टेशन के सामने एक इंजन से निकलते काले धुएं के कारण इतना अंधेरा हो गया था,

मानो रात हो गई हो। कुछ देर बाद जब काला धुंआ छंटने लगा, तब मुझे पता चला कि सेना-पुलिस का एक ट्रक पास ही खड़ा था। शायद उन लोगों ने अभी-अभी कोई काम खत्म किया था, और अपनी यूनिट में लौटने की आशा से जब मैंने उनसे मुझे हिरोशिमा महल तक छोड़ने को कहा, तो वे तुरंत तैयार हो गए। उनके दल में दो लोग थे, एक कॉर्पोरल और एक सार्जन्ट। शायद वे अणु-बम विकिरण के प्रत्यक्ष संपर्क में नहीं आए थे क्योंकि उनके शरीर पर बाहरी चोट के कोई निशान नहीं थे। यदि वे आज भी जीवित हों, तो मैं खुद उनसे मिलकर उनके प्रति आभार प्रकट करना चाहूंगा।

● अणु-बमबारी के बाद शहर की स्थिति

हालांकि मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है कि हम किस रास्ते से इत्सुकाइची से हिरोशिमा गए थे, लेकिन मुझे लगता है कि वे ट्रक को धान के खेतों से गुजरती किसी सीधी सड़क से होते हुए ले गए थे। सड़क पर विस्थापितों का सैलाब उमड़ रहा था, जो कि उस विपदा से बचकर भागने का प्रयास कर रहे थे। हिरोशिमा सिटी में प्रवेश करने के बाद वे ट्रक को ट्राम स्ट्रीट पर ले गए। ऐसा लग रहा था कि सब लोगों को शायद पहले ही हटा दिया गया है। पूरा शहर वीरान लग रहा था। यहां तक कि हमें कोई कुत्ता या बिल्ली भी दिखाई नहीं दिए।

हालांकि पहले मैंने उनसे मुझे हिरोशिमा महल तक छोड़ने को कहा था, लेकिन उन्होंने मुझे आइओइ पुल के पास ही उतार दिया। मेरी यूनिट पुल के पास ही थी, इसलिए मैंने सोचा कि मैं वहां तक पैदल ही पहुंच जाऊंगा। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका क्योंकि सड़क बहुत गर्म थी। मैंने फीतों वाले जूते पहने हुए थे, जो कि गेटर से लिपटे हुए थे, लेकिन मैं एक मीटर भी आगे नहीं जा सका और मुझे पुल पर ही रूकना पड़ा।

शायद एक घंटे तक यही होता रहा कि मैं 50 सेमी आगे बढ़ता था और फिर वापस पुल की ओर 50 सेमी पीछे आ जाता था। अचानक तेज वर्षा होने लगी, मानो मेरी त्वचा में सुइयां चुभोई जा रही हों। यह काली वर्षा थी, जिसने पूरे क्षेत्र को इस तरह भिगो दिया, जैसे हर तरफ तेल छिड़क दिया गया हो। इसके बावजूद, जब मैंने हाथों से अपना चेहरा पोंछा, तो मुझे बिल्कुल भी तेलयुक्त नहीं लगा। जले हुए मैदान पर वर्षा से बचने की कोई जगह न होने के कारण मेरी त्वचा पूरी तरह भीग गई और मैं बारिश के रुकने का इंतज़ार करने लगा।

वर्षा रूकने पर, तापमान में अचानक परिवर्तन हुआ और यह शरद ऋतु की तरह ठंडा हो गया। गर्म

सड़क भी पर्याप्त रूप से इतनी ठंडी हो चुकी थी कि उस पर चला जा सकता था।

जब मैं अपनी यूनिट में पहुंचा, तो बैरक दयनीय स्थिति में थे। जिस जगह बैरक बने हुए थे, वह इस तरह साफ हो चुकी थी, मानो वहां कभी कुछ था ही नहीं क्योंकि सभी इमारते ढहकर जल चुकी थीं और उनकी राख वर्षा के साथ बह गई थी।

सार्जन्ट ओकादा अपनी मौत की कगार पर थे क्योंकि उनका पूरा शरीर जल चुका था, लेकिन उनकी सांस अभी भी चल रही थी। चूंकि घावों के कारण उनका चेहरा पूरी तरह बदल चुका था, इसलिए मैं उन्हें तब तक नहीं पहचान सका, जब तक कि उन्होंने खुद मुझसे बात नहीं की, "मियाची, तुम भाग्यशाली हो "!मैं कुछ देर के लिए वहां से चला गया, लेकिन जब मैं शाम को वापस लौटा, तो मुझे सार्जन्ट ओकादा नहीं दिखाई दिए। अवश्य ही उन्हें कहीं और भेज दिया गया होगा।

हालांकि मेरी याददाश्त थोड़ी कमज़ोर है, लेकिन शायद 6 अगस्त की काली वर्षा के तुरंत बाद मैं दूसरी आर्मी फोर्सेस कमांड के जनरल शुनरोकु हाता से मिला। मुझे जनरल के एक सहायक सैन्य अधिकारी ने आदेश दिया, "तुम, जनरल हाता को उठाकर नदी पार करो और इस बात का ध्यान रखना कि वे भीग न जाएं"! जनरल हाता एक नाटे व्यक्ति थे। नदी पार करने के आदेश का पालन करते हुए मैंने जनरल को अपनी पीठ पर लाद लिया और वे बिल्कुल भी भारी नहीं थे।

● बचाव कार्य

वेस्ट परेड ग्राउंड में लगभग 90 सैनिक जमा थे, जो कि अणु-बमबारी से सुरक्षित बच गए थे। मुझे और अन्य सैनिकों को लाशों को जलाने के काम में लगाया गया था। बड़ी संख्या में शवों को जलाने की आवश्यकता पड़ती थी, जैसे कल 250, तो आज 300।

इस कार्यवाही के दौरान हिरोशिमा महल की सीढ़ियों पर मृतावस्था में मिले दो अमरीकी सैनिक विशेष रूप से स्मरणीय हैं। अवश्य ही वे अमरीकी सेना से पकड़े गए युद्ध-बंदी रहे होंगे, जिन्हें उन दिनों हिरोशिमा महल के पास वाली इमारत में रखा गया था।

6 अगस्त को, अणु-बमबारी वाले दिन, खाने के लिए कुछ न होने के कारण, मैं अपने 30 साथियों को लेकर कुछ बिस्किट लाने के लिए सिटी हॉल गया था। सिटी हॉल की स्थिति हमारी उम्मीद से बहुत अलग थी। हमने पूरा सिटी हॉल छान मारा, लेकिन हमें कहीं बिस्किट नहीं मिले। उस दिन अपनी भूख मिटाने के लिए मजबूरी मे हमें गर्म पानी में चीनी मिलाकर पीना पड़ा। शहर के बाहर से आए बचाव

दल की सक्रियता के कारण 7 अगस्त से, हमें राशन से चावल और बिस्किट मिलने लगे।

अगस्त के अंत तक हमने अपने बचाव कार्य जारी रखे और उस दौरान हम खुले में ही सोया करते थे।

अंततः 31 अगस्त को, सभी इकाइयों को अलग करने का आदेश जारी कर दिया गया। जब इकाइयां अलग हुईं, तो सैन्य-भंडार में रखीं विभिन्न वस्तुएं सैनिकों को वितरित की गईं। मुझे सेना की वर्दी और कंबल मिले। ग्रामीण भागों से आए कुछ सैनिकों को सेना के घोड़े दिए गए और वे उन पर सवारी करते हुए अपने घरों को लौट गए।

1 सितंबर को, मैं इतोज़ाकी बंदरगाह से एक जहाज पर सवार हुआ और इनोशिमा लौटा।

● बीमारियां

इनोशिमा लौटने के लगभग दो माह बाद, धान के एक खेत में पेशाब करते समय मुझे आश्चर्य हुआ कि मैंने लगभग 1-*शो* (लगभग 1।8 लीटर) मूत्र का विसर्जन किया, जिसका रंग भूरा था। उसके बाद मूत्र का भूरा रंग बना रहा। अगले वर्ष जठरांत्रिय समस्याओं के लिए मुझे अस्पताल में भर्ती करवाया गया। बाद में मुझे यकृत की विफलता के कारण पुनः अस्पताल में भर्ती किया गया। सन 1998 में मुझे मूत्राशय का कैंसर हो गया और तभी से मैं इसके उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती हूं।

सितंबर 1960 में मुझे अणु-बम उत्तरजीविता का स्वास्थ्य पुस्तिका प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ। वह प्रमाणपत्र पाने से पूर्व तक मैं तय नहीं कर पाया था कि मैं वह प्रमाणपत्र प्राप्त स्वीकार करूं या नहीं और अंत में नगरपालिका की सलाह मानकर मैंने उसे लेने का निर्णय किया। परिणामस्वरूप, जब भी मेरा सामना किसी ऐसी बीमारी से हुआ, जो अणु-बमबारी के कारण उत्पन्न हुई लगती थी, तो मैं इस बात के लिए आभार व्यक्त किया करता था कि मेरे पास वह प्रमाणपत्र था।

● युद्धोपरांत जीवन

युद्ध के बाद मैंने इनोशिमा में एक छोटी दुकान शुरू की। चूंकि हमारी दुकान ग्रामीण-क्षेत्र में थी, इसलिए हम न केवल खाद्य-पदार्थ, बल्कि परिष्कृत चावल व गेहूं तथा शुद्ध तेल भी बेचा करते थे और बाद में हम घरेलू उपकरण बेचने लगे। हालांकि जीवन सरल नहीं था, लेकिन फिर भी खर्चों को सुनियोजित करके मैं अपने बच्चों को यूनिवर्सिटी में भेज पाने में सफल रहा।

सन 1946 में मेरी बड़ी बेटी के जन्म के कुछ ही समय बाद, वह बच्ची और मेरी पत्नी चल बसे। जब मैंने 1947 में अपनी वर्तमान पत्नी से विवाह किया, तो उसके बाद दो बेटों और एक बेटी का जन्म हुआ। चूंकि युद्ध के बाद जन्मी मेरी सभी संतानें शारीरिक रूप से कमज़ोर थीं, इसलिए मुझे संदेह है कि ऐसा अणु-बम विकिरण के संपर्क में आने से मुझ पर हुए प्रभाव के कारण था। शायद मेरी पत्नी ने हमारी बेटी से कहा था कि वह इस बात का ज़िक्र किसी से न करे कि वह दूसरी पीढ़ी की अणु-बम पीड़ित थी क्योंकि इस तथ्य के कारण बाद में उसकी शादी में बाधा आ सकती थी।

● अणु-बमबारी में वरिष्ठ अफसर की मौत

यदि युद्ध अणु-बमबारी के बाद भी जारी रहता, तो जापान की स्थिति बहुत कठिन हो जाती। मेरा मानना है कि वर्तमान शांति अनेक बलिदानों के बाद मिली है।

मैं अणु-बम विकिरण के प्रत्यक्ष संपर्क में आने से बच गया और मैं आज भी जीवित हूं, इस बात का पूरा श्रेय मुझे यूनिट से बाहर जाने की अनुमति दिलवाने के सार्जेन्ट ओकादा के निर्णय को जाता है। 6 अगस्त को जब सार्जेन्ट ने मुझसे कहा था, "मियाची, तुम सौभाग्यशाली हो", उसके बाद से ही मुझे उनका कोई पता नहीं चला। बहुत समय तक मेरे मन पर इस बात का बोझ बना रहा। "सार्जेन्ट, सबसे ज़्यादा मैं आपके प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं"। मेरी आशा को समझते हुए, मेरे बच्चों ने इंटरनेट पर उनके बारे में जानकारी ढूंढने की कोशिश की, एक के बाद एक कई मंदिरों में जाकर उनके बारे में पूछताछ की और अंततः मेरे लिए सार्जेन्ट ओकादा की समाधि ढूंढ निकाली।

सन 2007 में मैं और मेरे सभी परिवार-जन सार्जेन्ट ओकादा की समाधि के दर्शन करने गए। उनकी समाधि पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने और उनकी आत्मा के प्रति आभार प्रकट करने के बाद, अंततः मुझे महसूस हुआ कि मेरे सीने से एक बहुत बड़ा भार उतर गया है।

शाँति की कामना अगली पीढ़ी के लिए

तोकिओ माएदोइ

● **ज़िंदगी अणु बम हमले से पहले**

1945 में मैं अपनी माँ हिसायो और दो बड़ी बहनों के साथ कुसुनोकि कस्बे के ब्लॉक नंबर एक में रहा करता था । मैं उस समय मिसासा प्राथमिक स्कूल, एडवांस्ड डिपार्टमेंट में प्रथम वर्ष का छात्र था । विद्यार्थी होने के बावजूद, उन दिनों मुझे हर रोज़ लामबंदी के तहत कारखाने में काम करना पड़ता था और स्कूल में कक्षा नहीं लगती थी । मैं अपने 40 सहपाठियों के साथ मिसासा होम्माचि ब्लॉक नंबर तीन स्थित निस्सान मोटर कंपनी के कारखाने में काम करता था । मेरी दोनों बड़ी बहनें भी काम करती थीं । काज़ुए, हिरोशिमा डाक बचत शाखा में और त्सुरुए, सैन्य वस्त्रागार की हिरोशिमा शाखा में काम करती थी ।

● **6 अगस्त**

उस सुबह भी मैं काम के लिए निस्सान मोटर कंपनी में ही था । मेरे सहपाठी और मैं कारखाने में अपनी-अपनी जगह काम कर रहे थे । मेरी ड्यूटी एक कार्यालय में लगायी गयी थी, जहाँ मुझे कई तरह के काम करने पड़ते थे, जैसे कि कारखाने से ऑर्डर मिलने पर कर्मचारियों तक हिस्से-पुर्ज़े पहुँचाना इत्यादि । उस समय भी कारखाने से किसी ने जब कुछ पेंच मँगाये, तो मैं हाथ में दो डिब्बे लिये कार्यालय से निकल कर, इमारत के पीछे बने कारखाने की ओर चलने लगा । तभी अचानक, मैं गैस बर्नर की लपटों जैसी नीलिमा लिए सफ़ेद रोशनी से घिर गया और मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया । मुझे यूँ लगा, मानो मेरा शरीर हवा में तैर रहा हो । मुझे यूँ लगा, कि हम पर अचानक बम हमला हुआ है । हालांकि हवाई हमले की चेतावनी वापिस ले ली गयी थी और हम पूरी तरह से निस्सहाय थे । मुझे अचानक लगा, "ओह, अब मैं गया काम से" ।

मुझे अच्छी तरह याद नहीं, कि कितने मिनट बीते लेकिन जब होश आया, तो देखा, कि मैं ज़मीन पर पड़ा था । कुछ देर बाद, जब धीरे-धीरे धुंध छंटने लगी और मुझे फिर से दिखायी देने लगा, तो उस वक्त लगा, "मैं ज़िंदा हूँ" ।

मैं पास गिरे एक गैस सिलेंडर के ऊपर गिरा पड़ा था, और मेरा हाथ छिल चुका था । अब सोचता हूँ तो याद आता है, कि अणु बम हमले के वक्त मैंने सिर मुंडवा रखा था और आधी बाजू की गोल गले वाली कमीज़ और निक्कर पहन रखी थी, इसलिए जो हिस्सा ढका न था वो बुरी तरह झुलस गया था । लेकिन, तब फ़ौरन मैं अपनी हालत का अंदाज़ा नहीं लगा पाया और न ही मुझे दर्द महसूस हुआ ।

साथ काम करने वाले सहपाठी भी दिखायी नहीं दिये और मुझे अपने परिवार की चिंता होने लगी इसलिए मैंने घर लौटने का फ़ैसला किया । जब चलना शुरु किया, तो देखा कि कारखाने का एक बड़ा दरवाज़ा गिरा पड़ा था, और तीन लोग उसके नीचे दबे हुए थे । पास के कुछ लोगों की मदद से हम उन्हें दरवाज़े के नीचे से खींचकर बाहर निकालने में कामयाब रहे । उसके बाद सभी "भागो, भागो" चिल्लाते हुए कारखाने से बाहर निकले ।

● हालात अणु बम हमले के बाद

शहर पूरी तरह, इमारतों और दीवारों के मलबे से अटा पड़ा था, और सड़कें तक दिखायी न देती थीं । यहाँ-वहाँ दबे हुए अँगारों से धुँआ उठता नज़र आता था । सड़क पर चल रहा हर कोई शक्स झुलसा हुआ था । इनमें से कई, बच्चों को छाती से चिपटाये दौड़ रहे थे । मलबे और गिरी हुई लकड़ियों के ढेर के ऊपर से गुज़रते हुए एक पैनी कील मेरे जूते के तले को छेदते हुए मेरे पैर में घुस गयी, मगर मैं इतना डरा हुआ था, कि उस वक्त दर्द का कोई अहसास न हुआ । पैरों तले के नीचे से मलबे से, "मुझे बचाओ" की दर्दनाक आवाज़ें सुनाई देती थीं, मगर उन्हें नज़रअंदाज़ करते हुए मैं नरक के उस दृश्य के बीच खुद बदहवाज़ घर की तरफ दौड़ा जा रहा था ।

जब घर पहुँचा, तो देखा, कि हमारा मकान पूरी तरह तबाह हो चुका था । मेरी माँ और बहनों को वहाँ होना चाहिए था, लेकिन उनका कोई नामो-निशान न था । 12 साल का मैं अचानक इस चिंता से घिर गया, "मैं अब इस दुनिया में अकेला पड़ गया हूँ" । कुछ देर तक अपने तबाह हो चुके मकान को देख कर सिर्फ़ यह सोच पाया, "हो गया सब ख़त्म" । तभी आस-पास से आवाज़ें उठीं, "भागो, आग फैल रही है" और आखिरकार मैंने वहाँ से भागने की हिम्मत जुटायी । आपात स्थिति में कहाँ शरण ली जाये, इस बारे में हमारे परिवार ने पहले ही एक जगह तय कर रखी थी, जो शहर के बाहर थी । जब मैंने उस ओर चलना शुरु किया, तो इत्तेफ़ाक से मेरी मुलाकात मेरे एक सहपाठी—नाकामुरा से हुई जो मेरे साथ उसी कारखाने में काम करता था । वो मिताकि कस्बे में अपने एक परिजन के घर शरण लेने जा रहा था और उसने मुझसे कहा "चलो साथ चलते हैं" ।

मिताकि कस्बा, पहाड़ी इलाका था, जहाँ कम नुकसान हुआ लगता था । यह नुकसान घरों की खिड़कियाँ टूटने तक ही सीमित था । उसकी बुआ ने कहा, "शुक्र है, कि तुम बच गये" । बुआ ने हमें चावल के गोले दिये, लेकिन भूख न लगने के कारण मैं खा नहीं पाया । उस समय शायद राहत की साँस ली थी,

जिसके कारण मुझे तभी से शरीर में दर्द महसूस होने लगा, और अहसास हुआ कि कुछ तो गड़बड़ है । शरीर का जो-जो हिस्सा कपड़े से नहीं ढका था, वो झुलस चुका था, शरीर में यहाँ-वहाँ बड़े-बड़े फफोले पड़ गये थे, और उनमें दर्द भरी चीसें उठने का अहसास हो रहा था । मैंने टोपी भी नहीं पहन रखी थी, इसलिए सिर झुलस जाने से वो भी दर्द भरी कसक का शिकार था । कहा जाता है, कि अगर शरीर का एक-तिहाई हिस्सा जल जाये तो आदमी की मौत तय होती है, लेकिन मैं शायद उससे कहीं ज़्यादा झुलस चुका था ।

अभी शायद दोपहर भी नहीं हुई थी, कि बारीश होने लगी । तपते शरीर पर बारीश की बुँदे अच्छी लग रही थीं, इसलिए मैं कुछ देर के लिए भीगता रहा । बारीश के बहते पानी को जब ध्यान से देखा, तो उसमें तेल जैसी दमक थी । उस वक्त बिल्कुल समझ न पाया, लेकिन अब समझ सकता हूँ, कि वो रेडियोधर्मी विकिरण युक्त "काली वर्षा" थी ।

उसके बाद, चूँकि मुझे यासुमुरा (हिरोशिमा शहर में मौजूदा आसामिनामि वॉर्ड) के एक स्कूल जाना था, जहाँ शरण स्थल था, इसलिए मैंने नाकामुरा को अलविदा कहा और दोबारा चल पड़ा । मैं अपने शरीर की तपन बर्दाश्त न कर पा रहा था, इसलिए रास्ते में पास के खेतों से खीरा तोड़ कर उसका रस अपने जले हुए घावों पर निचोड़ते हुए आगे बढ़ता गया ।

आखिरकार जब स्कूल पहुँचा तो वहाँ राहत केन्द्र खुल चुका था, घायल लोग एक कतार में ज़मीन पर इस तरह पड़े थे, जैसे पकड़ी गयी टूना मछलियों की खेप । वहाँ पहली बार मुझे डॉक्टर को दिखाया गया, लेकिन इलाज केवल इतना था, कि मेरे ज़ख्मों पर केवल खाना बनाने का तेल लगा दिया गया । स्कूल, अणु बम हमले के शिकार लोगों से ख़चाख़च भरा था, इसलिए मुझे एक अन्य शरण स्थल जाने को कहा गया । जब उस ओर बढ़ रहा था, तो इत्तेफ़ाक से मुझे मेरी बड़ी बहन त्सुरुए मिल गयी । अणु बम हमले के समय मेरी बहन घर पर ही थी और उसका सिर झुलस गया लगता था इसलिए उसके पट्टी बंधी हुई थी । आखिरकार किसी अपने से मिलकर राहत महसूस हुई, "शुक्र है, मैं अकेला नहीं हूँ" । जब बहन से माँ के सलामत होने का पता चला, तो हम माँ से मिलने निकल पड़े । अणु बम हमले के समय मेरी माँ, आँगन में थी और उसके पैर में गहरा घाव हो गया था और चेहरा भी झुलस चुका था । उसके बाद हमें वहाँ मेरी एक और बड़ी बहन काज़ुए भी मिली, जो अणु बम हमले के समय हिरोशिमा डाक बचत शाखा में अपने काम पर थी ।

युद्ध समाप्त होने तक हम यासुमुरा में ही रहे । मुझे याद है, तब मैंने यह सोचते हुए चैन की साँस

ली थी, "अब मुझे युद्ध में नहीं जाना पड़ेगा" । यासुमुरा में करीब दो हफ़्ते रहने के बाद, हम ताकाता तहसील में पिता जी के गाँव गोनो (मौजूदा आकिताकाता शहर) में अपने एक रिश्तेदार के घर चले आये ।

मेरी हालत बिगड़ती जा रही थी । आसपास के लोग कह रहे थे, "यह और नहीं जीयेगा" । गोनो गाँव में एक डॉक्टर मरीज़ों को देखने आया हुआ था, सो मुझे दो पहियों की गाड़ी पर इलाज के लिए ले जाया गया । वहाँ पहली बार मेरे ज़ख्मों पर जले की सफ़ेद दवाई लगायी गयी, और आखिरकार मुझे असल इलाज मिल सका । मेरे जलने के घाव इतने गंभीर थे, कि इलाज के लिए मैं अपने कपड़े भी नहीं उतार पाया, और कैंची से उन्हें कटवाना पड़ा । मुझे तेज़ बुखार था और हालत यह थी, कि किसी की मदद के बिना मैं शौचालय भी नहीं जा पा रहा था । अपने ज़ख्मों की चिंता किये बिना, मेरी माँ, अपनी सबसे छोटी संतान और इकलौते पुत्र यानी मेरी देखभाल में लगी थी । मुझे याद है, कि मेरी माँ रात भर सोये बिना लगातार मुझे पंखा झलती रही और कहती रही, "गर्मी लग रही होगी न, गर्मी लग रही होगी न" । जब मेरे ज़ख्म भरना शुरु हुए तो मेरी नाक से अक्सर खून निकलने लगा । कई बार तो खून रुकता ही नहीं था, और उसे रोकने के लिए डॉक्टर से इंजैक्शन लगवाना पड़ता था ।

धीरे-धीरे मैं ठीक हो गया और मैंने एक स्थानीय स्कूल जाना शुरु कर दिया । उस स्कूल में ऐसे करीब तीन विद्यार्थी थे, जो अणु-बम हमले की विभीषिका झेलने के बाद हिरोशिमा शहर के स्कूल से इस स्कूल में पढ़ने आये थे ।

सितम्बर महीने में मुझे हिरोशिमा का हाल जानने की जिज्ञासा हुई और मैं अकेला बस पकड़ कर हिरोशिमा शहर की ओर चल दिया । हमारे मकान के मलबे के पास, हमारे पड़ोसी, झोपड़ियाँ बना कर रह रहे थे । मेरी उनसे बात हुई । इधर-उधर कुछ और झोपड़ियाँ भी बनी थीं, जो बस बारिश से बचा पाने में सक्षम थीं । अणु बम हमले के समय मैं निस्सान मोटर कंपनी के जिस कारखाने में था, वहाँ जाने पर संयोग से मेरी मुलाकात संयंत्र प्रबंधक से हुई । उसने मेरा हाल-चाल पूछा और उससे अणु बम हमले के बाद का कुछ और हाल सुनने को मिला । पता लगा, कि अणु बम हमले के समय कार्यालय में काम कर रही एक महिला कर्मचारी की आँखों की पुतलियाँ बाहर उछल आयी थीं । यह सुनकर मैं एक बार फिर भयभीत हो गया, क्योंकि अणु बम हमले से ठीक पहले मैं भी उसी कार्यालय में मौजूद था । मेरे साथ उसी कारखाने में काम करने वाले 40 सहपाठियों से मैं उसके बाद, दोबारा कभी नहीं मिला, यहाँ तक कि अब तक मुझे उनका कोई अता-पता नहीं है ।

● ज़िंदगी की एक और शुरुआत

ज़िंदगी की शुरुआत दोबारा करने के लिए दो-तीन साल बाद, मैं हिरोशिमा शहर चला गया, क्योंकि गाँव में नौकरी मिलने के कोई आसार नहीं थे । शैक्षिक पृष्ठभूमि न होने के कारण, रोज़गार हाथ लगने तक काफ़ी मशक्कत करनी पड़ी । पेट भरने के लिए अख़बार बाँटने का काम किया, निर्माणाधीन जगहों पर मज़दूरी की । उस वक्त जो काम हाथ लगा वो किया ।

23 साल की उम्र में जब शादी होने वाली थी, तब मैंने चाहा, कि मेरी पत्नी को सब कुछ पता होना चाहिए, इसलिए मैंने उसे खुलकर सब साफ़-साफ़ बता दिया, कि मैं अणु-बम की विभीषिका झेल चुका हूँ । सब कुछ जान-समझ कर मेरी पत्नी मुझसे शादी करने को राज़ी हो गयी । उन दिनों अख़बारों वगैरह में विभीषिका झेल चुके लोगों पर अणु बम के प्रभावों के बारे में काफ़ी ख़बरें छायी रहती थीं, लेकिन मैंने इन पर बिल्कुल ध्यान न देने की कोशिश की । 27 साल की उम्र में मेरा पहला बेटा हुआ और उसी वर्ष मेरे साले की पहचान से मुझे तोयो इंडस्ट्रीज़ कंपनी (मौजूदा माज़दा मोटर कॉर्पोरेशन) में नौकरी मिल गयी । उससे पहले तक मैं लगातार नौकरियाँ बदल रहा था, लेकिन मेरे साले ने मुझे संयम रखने और कड़ी मेहनत करने को प्रेरित किया और मैंने भी अपनी संतान की ख़ातिर पूरी मेहनत करने का दृढ़ संकल्प लेते हुए वो नौकरी करना शुरु किया ।

● स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं

रात की पाली में साथ काम करने वाले कर्मियों से बात करने पर पता चला, कि उनमें से एक आदमी आइओइ पुल पर अणु-बम हमले की चपेट में आया था । यह पुल अणु-बम हमले के केन्द्र के लगभग नीचे था, इसलिए उसकी बात सुन कर मैं हैरान रह गया । अणु बम हताहत आयोग ने इस व्यक्ति से अपनी शारीरिक जाँच कराने का अनुरोध किया था । हम दोनों अणु-बम हमले के शिकार हुए थे इसलिए एक दूसरे से अपने दिल की बात किया करते थे । लेकिन उसका स्वास्थ्य बिगड़ना शुरु हो गया और उसे अस्पताल भर्ती होना पड़ा । एक बार वो काम पर लौटा भी था, लेकिन 50 साल की उम्र में वो चल बसा । मुझे भी लगातार अपनी सेहत की चिंता लगी रहती थी, इसलिए यह चमत्कार-सा ही लगता है कि मैं अब तक जीवित रहा । उसके बाद, मैंने 55 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने तक काम किया ।

● शाँति की कामना

अणु-बम हमले के अपने अनुभव के बारे में बात करने का फ़ैसला मैंने इसलिए लिया, क्योंकि अब मेरी उम्र होती जा रही है । शारीरिक रूप से भी कमज़ोर पड़ता जा रहा हूँ । इसलिए यह ख़्याल ज़ोर पकड़ता जा रहा है, कि जीते जी अपने अनुभव युवा पीढ़ी तक पहुँचा दूँ । पहले की तरह अब युवाओं को लड़ाई के मैदान में ज़बरदस्ती नहीं भेजा जाता, बल्कि वो अपनी इच्छानुसार काम कर सकते हैं । अभी सोच भी नहीं सकते लेकिन 64 साल पहले जो कुछ हक़ीकत में हुआ, या जवानी में जिन्होंने अपनी जान गँवाई, या एक पीढ़ी पहले के लोगों ने जो वक्त झेला, इस सब के बारे में युवा पीढ़ी अगर थोड़ा-सा भी समझे तो मुझे ख़ुखी होगी ।

इसके अलावा मैं चाहता हूँ, कि युवा पीढ़ी परमाणु हथियार नष्ट करने की दिशा में शाँति गतिविधियों पर ज़ोर दें, ताकि जो कुछ मैंने देखा, वो दोबारा कभी न हो । उस तरह की त्रासदी से गुज़रना किसी के लिए भी ख़ुशगवार नहीं हो सकता । मैं अपने जीते जी, दुनिया को परमाणु अस्त्रों से छुटकारा पाते देखना चाहता हूँ ।

कभी नहीं भरते युद्ध के घाव

क्योको फ़ुजिए

● **हालात अणु बम हमले से पहले**

उस समय मैं उजिना प्राथमिक स्कूल में चौथी कक्षा की छात्रा थी । मेरे पिता की उम्र उस वक्त 41 साल की थी और वो सैन्य विभाग के जल-पोत मुख्यालय में कार्यरत थे । साल का ज़्यादातर वक्त वो सैन्य जहाज़ पर सवार होकर विदेश में बिताते थे । उजिना कस्बे (हिरोशिमा शहर में मौजूदा मिनामि वॉर्ड) में हमारे घर वो छः महीने में एक बार ही आया करते थे । मेरी माँ उस समय 31 साल की थी, और वो दाई थी, इसलिए ख़तरे से भरा होने पर भी वो शहर नहीं छोड़ सकती थी, क्योंकि उसे मरीज़ों की देखभाल करनी थी । मेरी एक साल पाँच महीने की छोटी बहन और 80 साल की दादी भी हमारे साथ रहा करती थी । कोरिया में पोत-कारखाने का प्रबंधन कर रहे मेरे एक चाचा, अपने बेटे को जापानी स्कूल में पढ़ाना चाहते थे, इसलिए उसे हमारे यहाँ छोड़ गये थे ।

● **स्कूली बच्चों को सुरक्षित जगह ले जाने से जुड़ी यादें**

अप्रैल 1945 के आसपास, उजिना प्राथमिक स्कूल के तीसरी से छठी कक्षा के बच्चों को सुरक्षित जगह ले जाना तय हुआ था । इसके लिए बच्चों को प्रिफ़ैक्चर के उत्तर में मियोशि कस्बे के साकुगि गाँव या फ़ुनो गाँव (मौजूदा मियोशि शहर) भेजा गया । मुझे मियोशि कस्बे के जोजुन-जि मंदिर भेजा गया ।

मंदिर के खाने में हर चीज़ सोयाबीन से बनी थी । खाने में सोयाबीन से चिपके थोड़े से चावल और सोयाबीन का ही अल्पाहार था । एक दिन मंदिर के पुजारी का बेटा, जो जुनियर हाई स्कूल का छात्र था, उसके खाने के डब्बे में से चावल का एक गोला गायब हो गया । अध्यापकों ने हम सब बच्चों को बुला कर मंदिर के मुख्य कक्ष में बिठाया और कहा, "जिस ने भी चुराया है वो अभी के अभी कबूल करे" ।

मंदिर के पास तोमोए नाम का एक बड़ा-सा पुल हुआ करता था, जिसके नज़दीक एक श्राईन था । इस श्राईन में चेरी का एक बड़ा सा पेड़ था, जहाँ चेरी के फल लगा करते थे । बड़े बच्चे पेड़ पर चढ़ कर चेरी तोड़ कर खाया करते थे । बड़े बच्चों ने मुझे बुलाया और पेड़ के नीचे बाहर की ओर मुँह करके खड़े रह कर पहरेदारी करने को कहा । मैं बिल्कुल अंजान थी । तभी एक बूढा आदमी हमारी ओर चिल्लाता हुआ आया और मुझे पकड़ लिया । फिर उसने ऊपर देखा और दूसरे बच्चों पर चिल्लाते हुए कहा, "सब के सब नीचे उतरो" और बड़े बच्चे भी पेड़ से नीचे उतर आये । वो बूढा आदमी मेरी बाँह पकड़े हुए था और मैं रो रही थी । उसने मुझसे पूछा, "कहाँ से हो", और मैंने जवाब दिया, "जोजुन-जि मंदिर" । "तो

फिर ठीक है" यह कह कर उसने मुझे छोड़ दिया । फिर उस बूढ़े आदमी ने कहा, "ठीक यहाँ नीचे प्याज़ और दूसरी सब्ज़ियाँ उग रही हैं । अगर तुम इन पर पैर रखोगी तो इन्हें भला कौन खा पायेगा । तुम्हें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए । अब रोना बंद करो" । उस शाम वो बूढ़ा आदमी हमारे लिए भाप में पकी शकरकंदी वगैरह लेकर आया । हालांकि शुरु-शुरु में उससे डर लग रहा था, लेकिन असल में वो बड़ा ही दयालु आदमी था । मुझे लगता है, कि उसे हम पर ज़रूर दया आयी होगी, कि देखो भूख के मारे इन्हें चेरी चुरानी पड़ रही है ।

शरण स्थलों में कभी-कभी बच्चों के माँ-बाप मिठाईयाँ भेजा करते थे । हालांकि हमें उन्हें चखने का मौका कभी नहीं मिला । मेरी माँ ने भी मुझे रसे में जमीं सोयाबीन की सख़्त टोफ़ियाँ भेजी थीं, लेकिन वो सब अध्यापकों ने ज़ब्त कर लीं । बड़े बच्चों के अनुसार, वो सारी टोफ़ियाँ शायद, अध्यापकों के पेट में जा चुकी थीं ।

जूँए भी बहुत पड़ चुकी थीं । बुरी हालत थी । हम अख़बार बिछा कर सिर में कंघी किया करती थीं । खून चूस-चूस कर वो जूँए काली पड़ चुकी थीं और हम सब मिलकर उन्हें एक-एक करके नाखून से चटका कर मारा करती थीं । जो कमीज़ पहन रखी थी, उसे मंदिर के आँगन में धूप वाली जगह में सुखाया करती थीं ।

● 6 अगस्त

अणु बम हमले से ठीक एक सप्ताह पहले मेरे पिता विदेश से लौट आये थे, इसलिए मैं भी उनसे मिलने जल्दी से घर लौट आयी । और फिर 5 अगस्त को मुझे वापिस शरण स्थल जाना था, लेकिन उस दिन की टिकट न मिल पाने के कारण, वापसी 6 अगस्त की तय हुई ।

6 अगस्त की सुबह, मेरी माँ, मेरी छोटी बहन को पीठ पर बिठा कर मुझे हिरोशिमा स्टेशन तक छोड़ने आयी । पड़ोस की एक बूढ़ी औरत, जो मियोशि के शरण स्थल में अपने पोते से मिलने जा रही थी, वो भी मेरे साथ रेलगाड़ी में सवार हो गयी । हमने गेइबि लाइन पकड़ी और हम मियोशि की ओर जाते रास्ते को पीठ करके बैठ गये । जैसे ही गाड़ी पहली सुरंग में घुसने लगी, हमें तीन पैराशूट दिखायी दिए । फिर गाड़ी सुरंग में घुस गयी और तभी अचानक बम विस्फोट हुआ ।

उसका धक्का बहुत ज़बरदस्त था । कानों में भड़ाम की आवाज़ गूँजी । चूंकि मैं बैठी हुई थी इसलिए सलामत थी लेकिन जो लोग खड़े थे, यहाँ तक की बड़े लोग भी, पीछे की ओर पलट कर नीचे गिर गये

। मैं ठीक से सुन नहीं पायी । मुझे यूँ लगा, मानो मेरे कानों में पत्थर भरे हों ।

सुरंग से बाहर निकलने पर अणु बम का धुआँ बहुत ही सुंदर दिखायी दे रहा था । उसे देख कर मैंने साथ की उस बूढ़ी औरत से कहा, "वाह, कितना गज़ब है" । मैं अभी बच्ची थी, इसलिए समझ न पायी, कि हिरोशिमा का क्या हुआ होगा ।

जब हम मियोशि पहुँचे, तो उस बुढ़िया ने कहा, "रेडियो में बता रहे हैं, कि हिरोशिमा पूरी तरह तबाह हो गया है" । लेकिन, मैं फिर भी ठीक से समझ न पायी कि आखिर वहाँ के हालात क्या थे, इसलिए मैं दोपहर में स्कूल में घास काटने गयी । उस समय पहली बार, हिरोशिमा से अणु बम हमले के शिकार लोगों को लेकर एक ट्रक स्कूल पहुँचा । बुरी तरह से झुलसे लोग, एक के बाद एक ट्रक से उतर रहे थे, जिसे देख कर मैं दंग रह गयी । वो आदमी जिसका चेहरा झुलस चुका था और चेहरे की त्वचा गिरी जाती थी, जिसे वो हथेलियों से सहारा दे कर रोके था । वो औरत जिसकी छाती पूरी तरह फट चुकी थी और वो आदमी जो एक बाँस के झाड़ू को उलटा करके उसे लाठी की तरह टिकाए लड़खड़ाते हुए उसी के सहारे चल रहा था । मुझे अब भी वो दृश्य अच्छी तरह याद है । डर लगने की बजाय मुझे यह सब देख कर हैरत हो रही थी ।

● अणु-बम हमले के शिकार मेरे परिजनों के हालात

अणु बम हमले के कुछ तीन दिन बाद, हिरोशिमा से मेरे घर वालों ने मंदिर से संपर्क किया । उसके बाद 12 या 13 अगस्त को मैं छठी कक्षा के अपने एक पड़ोसी लड़के नोबु-चान के साथ रेलगाड़ी से हिरोशिमा लौट आयी । हिरोशिमा स्टेशन पर पिता जी मुझे लेने आये । उनके साथ मैं हिजियामा पहाड़ी के किनारे बनी एक सड़क से घर तक चल कर आयी । मुझे याद है, चलते वक्त पिता जी बता रहे थे, कि परिवार पर क्या बीती । उन्होंने यह भी कहा, "यहाँ अगले 70 सालों तक कुछ नहीं उगेगा" ।

घर पहुँची तो देखा, माँ सिर से पाँव तक चादर से लिपटी थी । वो इसलिए, ताकि मक्खियाँ घावों पर अंडे ना दे सकें, क्योंकि माँ का पूरा शरीर झुलस चुका था । छोटी बहन का भी पूरा चेहरा झुलस कर एकदम काला पड़ गया था । उसके हाथ-पैर भी बुरी तरह झुलस चुके थे, और वो भी चादर से लिपटी हुई थी । वो नन्ही सी जान, माँ की हालत देखकर डर के मारे सारा समय रोती रहती थी ।

जब अणु-बम गिराया गया था, तब मेरी माँ और बहन, एन्को पुल पर एक ट्राम का इंतज़ार कर रहे थे । उससे करीब एक घंटा पहले जब हवाई हमले का सायरन बजा था, तब माँ ने अपनी रक्षा टोपी,

पड़ोस की एक बूढी औरत को दे दी थी, जिसका कहना था, कि वो अपनी टोपी भूल आयी है । इस वजह से माँ, अणु-बम की रोशनी में पूरी तरह नहा गयी थी । मेरी बहन, माँ की पीठ पर थी, इसलिए उसका बायां हाथ-पैर और चेहरा जल गया था । माँ ने बहन को पीठ से उतार कर, रास्ते में जहाँ कहीं भी आग बुझाने का पानी दिखा, बहन को भिगोते हुए भागी और हिरोशिमा स्टेशन के पीछे पूर्वी अभ्यास मैदान में शरण ली ।

जब अणु-बम फटा, तब मेरी दादी घर पर ही थी । हालांकि मकान में आग नहीं लगी थी, मगर वो बुरी तरह टूट-फूट गया था ।

पिता जी और चचेरे भाई ने माँ और बहन की तलाश में पूरे दो दिन तक शहर के चक्कर लगाये । जब वो मिले, तो माँ का शरीर झुलस कर इतना सूज चुका था, कि आदमी और औरत का भेद करना मुश्किल था । इत्तेफ़ाक़ से 6 अगस्त को माँ वो पोशाक पहन कर गयी हुई थी, जिसका कपड़ा पिता जी ने विदेश से भेजा था । कपड़े के बाल बाल बचे हिस्से में से एक कत्तर फाड़ कर माँ ने बहन के हाथ में पहचान के तौर पर बाँध दी थी । जब मेरे पिता और चचेरा भाई उन्हें ढूंढते हुए वहाँ पहुँचे, तो मेरी एक साल की छोटी बहन ने चचेरे भाई को पहचान कर उसे आवाज़ दी "आ-चान" । और तब बहन के हाथ में बँधी कत्तर देख कर दोनों को पहचान लिया गया । मेरी माँ ने कहा, "मेरा तो वक्त हो गया है, तुम बस इस बच्ची को लेकर घर जाओ", लेकिन पिता जी, दोनों को एक बड़ी दुपहिया गाड़ी में बिठा कर घर ले आये ।

● माँ की मौत

15 अगस्त को माँ चल बसी । पिता जी ने एक पुराने पेड़ से बिना ढक्कन का सादा सा ताबूत बना कर घर के पीछवाड़े में एक खाली जगह में माँ का दाहसंस्कार किया । वहाँ पर हर कोई शवों का दाहसंस्कार करता था, जिस वजह से सारी बदबू हमारे घर घुस आती थी । इतनी बदबू फैल जाती थी, कि बर्दाश्त से बाहर थी ।

मरते समय माँ ने दादी से कहा था, "सासू माँ, मैं एक बड़ा आलू खाना चाहती हूँ"। युद्ध के दौरान भोजन की कमी होने के कारण माँ, कपड़े और दूसरी चीज़ें लेकर गाँव जाया करती थी और उनके बदले आलू और खाने-पीने का दूसरा सामान लाया करती थी । मुझे लगता है, कि जो आलू उसे बदले में मिलते थे, उसमें से वो छोटे वाले खाया करती थी । छोटे आलू बहुत कड़वे होते हैं, और आजकल तो शायद

ही खाये जाते हों ।

माँ के श्राद्ध पर मैं हमेशा तोरो नागाशि (एक समारोह जिसके दौरान नदी में कागज़ की कंदीलें तैरायी जाती हैं) के लिए आती हूँ । उबले हुए बड़े आलूओं की भेंट चढ़ाती हूँ । आज भी जब कोई बड़ा आलू देखती हूँ, तो दिल करता है, कि काश माँ को यह खिला पाती ।

● युद्ध के बाद कस्बे का हाल

उजिना प्राथमिक स्कूल के आगे नदी किनारे, एक खुले मैदान में शवदाह किया जाता था । टिन की नालीदार चादरों से शवों को चारों तरफ़ से ढक कर जलाया जाता था । टिन की नालीदार चादरों में शव का सिर फँसाने के लिए एक छेद होता था । हम बच्चे जलते शवों के पास से होते हुए समुद्र में तैरने जाया करते थे । इसलिए वहाँ से गुज़रते वक्त बहुत सी अस्थियों के ऊपर से होकर जाना पड़ता था और कई बार मैं सोचती थी, कि "अरे, अब सिर जल रहा है" । मेरे प्राथमिक स्कूल की छठी कक्षा में आने तक, उस जगह पर शवदाह किया जाता रहा ।

युद्ध के बाद ज़िंदगी वाकई फटेहाल थी । सिर्फ़ हम ही नहीं, उस वक्त हर किसी का यही हाल था ।

● युद्ध के बाद छोटी बहन का हाल

मेरी छोटी बहन, जो अणु-बम हमले के वक्त माँ के साथ थी, वो बच गयी । उस वक्त, उसकी उम्र के किसी नन्हे बच्चे का बचना चमत्कार माना गया । बड़े होने तक वो बस यही सुनती आयी, "अच्छा हुआ, तुम बच गयी । अच्छा हुआ, तुम ज़िंदा हो" ।

लेकिन मेरी बहन के पैर में भीषण फफोले हो गये थे और उसका पैर विकृत हो चुका था । वो जूते नहीं पहन सकती थी, इसलिए उसे हमेशा गेता (लकड़ी की जापानी खड़ाऊं) पहननी पड़ती थी । उन दिनों बहुत से लोग गेता पहना करते थे, इसलिए आमतौर पर उसे कोई दिक्कत नहीं हुई, लेकिन जब कोई फ़ील्ड ट्रिप या खेल उत्सव होता था, तो उसे दिक्कत होती थी, क्योंकि वो वहाँ गेता नहीं पहन सकती थी । कोई चारा न होने पर वो दो जोड़ी फ़ौजी जुराबे पहना करती थी ।

पाँव को लेकर बहन को बहुत बुरी तरह चिढ़ाया जाता था । उस वक्त अफ़वाह फैली, कि अणु-बम की बीमारी संक्रामक है, इसलिए लोग बहन की ओर इशारा करते हुए कहते, "उंगलियाँ सड़ रही हैं", "पास से देखोगे, तो तुम्हें भी बीमारी हो जायेगी" । अणु-बम हमले के कई साल गुज़र जाने के बाद भी, जब

वो प्राथमिक स्कूल जाने लायक हुई, तो उसे किसी तरह का तमाशा समझा जाता और लोग दूर-दूर से उसे देखने आया करते ।

मगर मेरी बहन ने मुझे या दादी को कभी नहीं बताया, कि लोग उसके साथ ऐसा बर्ताव कर रहे थे । अपने दर्द की शिकायत किये बिना वो बस इतना कहती थी, "दादी, अच्छा हुआ न मैं बच गयी" । बचपन से वो बार-बार यही सुनती आयी, "अच्छा हुआ बच गयी । इतना झुलस जाने के बाद भी बच गयी, अच्छा हुआ", इसलिए अब इस बारे में सोचने भर से उसे दर्द होता है । पर हाल में जब मैंने बहन की डायरी पर नज़र डाली, तो उसमें कहीं लिखा था, "उस वक्त सोचती थी, कि मर ही जाती तो अच्छा था" । यह पढ़कर मैं एक बार फिर सोचने पर मजबूर हो गयी, कि उसके लिए यह सब कितना कठिन रहा होगा ।

उसको कहा गया था, कि अगर वो अपने पैर का ऑप्रेशन कराना चाहती है, तो उसे 15 साल का होने के बाद ऐसा कराना होगा । सीनियर हाई स्कूल की गर्मियों की छुट्टियों के दौरान, आखिरकार वो अपना ऑप्रेशन करा पायी, जो वो लंबे समय से चाहती थी । मेरी बहन इस पल का वाकई बहुत इंतज़ार कर रही थी । वो हमेशा कहती थी, कि जब वो हाई स्कूल में दाखिल हो तो वो जूते पहनने के काबिल होना चाहती है । लेकिन इसके बावजूद पैरों में जूते पहन पाना उसके लिए संभव न हुआ । हालांकि डॉक्टरों ने उसके विकृत पैर को ठीक करने की कोशिश में उसके पेट और नितंब से त्वचा प्रत्यारोपित की, लेकिन प्रत्यारोपित की गयी त्वचा काली पड़ गयी और उसके पाँव की कनिष्ठा उंगली, अपनी जगह से करीब 3 सैंटिमीटर हट गयी थी । ऑप्रेशन से पहले मेरी बहन का कहना था, "अब मैं स्पोर्ट्स शूज़ भी ठीक तरह से पहन पाउंगी", लेकिन अणु-बम हमले को आज 65 साल बीत चुके हैं और वो अब भी ढंग से जूते नहीं पहन सकती ।

उसकी कनिष्ठा उंगली में रगड़ से दर्द होने लगता था, इसलिए उसने स्पोर्ट्स शूज़ में छेद करके पहनने की कोशिश की, लेकिन अब वो उंगली, छेद से रगड़ खाने लगी और उसमें घाव हो गया । ऐसा कोई दिन न था, जब उसके पाँव से खून न निकला हो । यह सोच कर कि अन्य लोग जब खून से सने उसके जूते देखेंगे तो बुरा महसूस करेंगे, वो टूथपेस्ट से उस चिपके हुए खून को ढका करती थी ।

जब मेरी बहन अणु बम में जीवित बचे लोगों के अस्पताल में भर्ती हुई, तो उसकी मुलाकात डॉक्टर तोमिन हारादा से हुई, जिन्होंने उसे कहा, "अगर कुछ बताना चाहती हो, तो ज़रा भी न झिझकना" । जब मेरी बहन ने सीनियर हाई स्कूल पास किया, तो उसने डॉक्टर हारादा से बात की, जिन्होंने उसे एक

जापानी मंत्री से मिलवाया, जो लॉस एंजेलस में रहा करता था । बहन के सीनियर हाई स्कूल में दाखिल होने से पहले ही पिता की मौत हो जाने के कारण, उस समय हमारे घर में पैसों की तंगी थी । सीनियर हाई स्कूल के एक अध्यापक ने मेरी बहन को पार्ट टाईम नौकरी दिलवायी, जहाँ उसने 20 साल की उम्र तक बड़ी लगन से काम किया और जब उसके पास अमरीका की एक तरफ़ की टिकट के पैसे इकठ्ठा हो गये, वो अमरीका के लिए रवाना हो गयी ।

मेरी बहन, मंत्री जी के यहाँ रहा करती थी, और उसे लौंडरी में काम मिल गया, जहाँ से उसका ख़र्चा निकलने लगा । लगता है, कि वो वक्त उसके लिए बहुत कठिन रहा, और आज भी वो लौस एंजेलस में मेहनत कर रह रही है । हालांकि उसका मानना था, कि आम लोगों की तरह उसकी कभी शादी नहीं होगी, लेकिन अमरीका में उसकी शादी एक जापानी से हो गयी और उनकी तीन संतानें हैं ।

● ओसाका की आप बीती

मेरी बहन के ओप्रेशन के करीब एक सप्ताह बाद, मैं अपनी एक सहेली से मिलने ओसाका गयी । मेरी बहन ने मुझसे कहा, "मेरी हालत अब ठीक है, इसलिए जाओ, ओसाका हो आओ" ।

मैंने एक लोकल एक्सप्रेस पकड़ी और शाम को वहाँ पहुँच गयी, लेकिन मुझे मेरी सहेली के घर का पता न मालूम था, इसलिए पता पूछने पुलिस बॉक्स पर रुकी । वो एक युवा पुलिसकर्मी था, बहुत नम्र था, और वो करीब एक घंटे तक मेरे साथ घर ढूंढता रहा । जब मेरी सहेली का घर मिला, तो मैंने पुलिस वाले से कहा, "आपका बहुत बहुत धन्यवाद । आपने बहुत मदद की" । तब उसने पहली बार मेरे से पूछा, "आप कहाँ से हैं" और मैंने उसे बताया, "मैं हिरोशिमा से हूँ" । वो आदमी अचानक एक कदम पीछे हटते हुए बोला, "वो हिरोशिमा जिस पर अणु-बम गिरा था" । मैंने जवाब दिया, "हाँ" । इस पर उसका कहना था, "एक महिला हिरोशिमा से– ओह यह तो ठीक नहीं मेरे लिये । हिरोशिमा से अणु-बम का शिकार हुई एक महिला" । उसने यह सब इस भाव से कहा, मानो उसे मुझसे कोई रोग होने वाला हो । उस समय तक मैंने नहीं सोचा था, कि मैं अणु-बम की इतनी चपेट में आयी थी, इसलिए मैं इस हादसे से पूरी तरह स्तब्ध थी ।

इस घटना के बारे में मैं अपनी बहन को नहीं बता पायी । मैंने ओसाका में अपनी सहेली से इस बारे में बात की, लेकिन उसने मुझसे कहा, "तुम्हें अपनी बहन को यह बिल्कुल नहीं बताना चाहिए, क्योंकि इससे उसे बहुत ख़राब लगेगा" । उसके बाद मैंने कभी किसी को नहीं बताया, कि मैं हिरोशिमा से हूँ

।

● **कपड़े की दुकान की घटना**

यह घटना, दसियों साल पहले की है, जब मैं कपड़े की दुकान पर एक ग्राहक की मदद कर रही थी । एक अंजान महिला अचानक मेरे पास आयी और मेरी बहन का नाम लेकर बोली, "क्या आप उसकी बड़ी बहन हैं", मैंने कहा, "जी, बिल्कुल सही । लेकिन क्या हुआ ? आप उसे कैसे जानती हैं" ? वो महिला फ़ुरुए में रहती थी और उस समय तक मेरी बहन को लेकर वहाँ तक अफ़वाहें फैल चुकी थीं ।

ओसाका में जो कुछ हुआ और दूसरी अन्य घटनाओं के कारण, मैं अपनी बहन के अमरीका जाने के फ़ैसले के हक़ में थी । मैंने सोचा, अगर वो जापान में चिढ़ाये जाने और भेदभाव से बचना चाहती है, और एक अजनबी देश जाना चाहती है, तो शायद इसी में उसकी भलाई होगी ।

● **शाँति की कामना**

मेरा मानना है, कि वो लोग जिन्होंने अणु-बम हमले की विभीषिका असल में नहीं झेली है, वो पीड़ितों का दर्द नहीं समझ सकते । अपनी उंगली खुद काटने से शायद आपको पहली बार दर्द का अहसास हो, लेकिन आप किसी दूसरे व्यक्ति की उंगली कटने के दर्द को नहीं समझ सकते । इसलिए किसी से अणु-बम हमले का अपना अनुभव साझा करना, वाकई में मुश्किल काम है ।

युद्ध ने हमारे दिलों के भीतर तक चोट पहुँचायी । न केवल बाहरी ज़ख्म, बल्कि तरह-तरह के ज़ख्म अब तक हरे हैं, और दसियों साल बीत जाने के बाद भी ये ज़ख्म दर्द देते हैं । मेरी बहन को बचपन से युद्ध या अणु-बम के बारे में बात करने से नफ़रत है । जब भी हम इस बारे में बात करते हैं, वो हमेशा वहाँ से चली जाती है । अमरीका जाने के बाद, वो अपने ज़ख्म छुपाने के लिए हमेशा मोटी जुराबे पहनती है और उसने दोबारा अणु-बम के बारे में कभी बात नहीं की ।

युद्ध कभी होना ही चाहिए ।

देखा मैंने नरक

किमिको कुवाबारा

● **ज़िंदगी अणु बम हमले से पहले**

उस समय मेरी उम्र 17 साल की थी । मैं अपनी माँ और बड़ी बहन के साथ हिरोशिमा शहर के मिसासा-होन्माचि कस्बे के ब्लॉक नंबर तीन (मौजूदा निशि वॉर्ड) में रहा करती थी । मेरे पिता गुज़र चुके थे और मेरे तीन बड़े भाई थे, जिनमें से सबसे बड़े की शादी हो गयी थी और वो अलग रहता था, जबकि मेरे दो अन्य भाईयों को सेना से बुलावा आया था और वो यामागुचि प्रिफ़ैक्चर में तैनात थे ।

उन दिनों मैं हिरोशिमा केन्द्रीय प्रसारण केन्द्र के सार्वजनिक मामलों के विभाग में काम करती थी । यह केन्द्र, कामि-नागारेकावा कस्बे (मौजूदा नाका वॉर्ड में नोबोरि कस्बे) में था, जहाँ आसपास के मकानों को खाली करवा कर उन्हें नष्ट कर दिया गया था और अब वो जगह एक खुले मैदान की तरह हो गया थी । मुझे याद है, हमारे केन्द्र से सेना से जुड़ी काफ़ी ख़बरें प्रसारित की जाती थी, इसलिए केन्द्र की खिड़कियों को हवाई हमलों का मुकाबला करने लायक मज़बूत बनाया गया था ।

● **6 अगस्त**

उस दिन की सुबह, हवाई हमले का सायरन बजा था और ऐसे में घर से निकलना मुश्किल हो गया था, जिसके कारण मुझे दफ़्तर पहुँचने में देर हो गयी थी । सायरन बंद हुआ और मैं काम पर करीब 8 बजे पहुँची । हमेशा की तरह, अपने सहकर्मियों के साथ मिल कर मैंने दफ़्तर की साफ़-सफ़ाई करना शुरु कर दी । जब केन्द्र-प्रबंधक के कार्यालय की सफ़ाई करने गयी, तो आँगन से मैंने एक महिला को कहते सुना, "बी-29 (विमान) उड़ रहा है"। उसकी आवाज़ सुनकर वो विमान देखने का मन किया और जैसे ही खिड़की के पास जाने की सोची, तभी अचानक खिड़की के बाहर एक चमकदार रोशनी सी हुई । माचिस जलाते वक्त जो लाल रंग की चिंगारी निकलती है, यह रोशनी वैसी ही चिंगारी का बहुत बड़ा प्रचंड रूप थी । मैंने तुरंत अपने दोनों हाथों से आँख-कान ढक लिये और वहीं नीचे बैठ गयी । हमें उस समय यही सिखाया गया था, कि बम विस्फोट होने पर ऐसा करें । अँधेरे में मुझे भारहीनता का अहसास हुआ और मेरे पूरे शरीर में कड़कड़ाहट-सी महसूस हुई । दर्द हो रहा था या नहीं हो रहा था, कुछ कह नहीं सकती, लेकिन एक बड़ा ही अजीब-सा अहसास था । मुझे लगा कहीं मैं मर ही तो नहीं जाऊंगी । उस वक्त ध्यान नहीं दिया, लेकिन विस्फोट से काँच के टुकड़े चूर-चूर होकर मेरे चेहरे और बायीं भुजा में घुस गये और मेरा पूरा शरीर खून से लथ-पथ हो गया था । बाएं गाल में तो अब भी शीशे का टुकड़ा बचा हुआ है ।

कुछ देर तक ज्यों का त्यों बने रहने के बाद, गलियारे से लोगों की धीमी-सी आवाज़ सुनायी दी । कमरे में घोर अँधेरा था और कुछ दिखायी नहीं दे रहा था । यह सोच कर, कि बहर हाल यहाँ से निकला जाए, मैंने गलियारे से आ रही आवाज़ों की ओर जैसे ही बढ़ना शुरु किया, एक आदमी की पीठ मेरे हाथ लगी । "ओह ! इस आदमी के साथ निकलना ठीक रहेगा, मैं अभी मरी नहीं हूँ" यह सोच कर मैंने उस आदमी की बैल्ट कस कर पकड़ी और उसके पीछे-पीछे चलने लगी । आख़िरकार हम दरवाज़े के पास पहुँच ही गये । दरवाज़े के पास लोग इकठ्ठा हो गये थे । सब ने मिलकर वो भारी दरवाज़ा खोला और बाहर निकलने में कामयाब हो गये । उषाकाल की तरह अँधेरा छाया था और वो सब चीज़ें जो विस्फोट में उड़ गयी थीं, अब आसमान से गिर रही थीं । केन्द्र से बाहर आये लोगों के चेहरे एकदम काले पड़ गये थे, बाल सिरे से खड़े थे, शरीर खून से लथ-पथ था और कपड़ों के चीथड़े उड़े हुए थे । जब तक हमने एक दूसरे की आवाज़ न सुनी, हम एक-दूसरे को पहचान न पाये ।

हमें लगा, कि केन्द्र को निशाना बना कर बम गिराया गया है, जो कि बहुत बुरा हुआ है । पास में चूगोकु शिम्बुन कंपनी की इमारत में केन्द्र का सब्सक्रिप्शन विभाग का एक शाखा कार्यालय था, मैंने सोचा कि क्यों न वहाँ जाया जाये, इसलिए मैं सार्वजनिक मामलों के विभाग की कुछ महिलाओं के साथ बाहर मैदान में चली गयी । तब पहली बार पता लगा, कि नुकसान सिर्फ़ हमारे केन्द्र को नहीं हुआ है । आसपास की सारी इमारतें मिट्टी में मिल चुकी थीं, यहाँ-वहाँ से आग की लपटें उठ रही थीं । चूगोकु शिम्बुन कंपनी की इमारत की पाँचवी और छठी मंज़िल में हमारा शाखा कार्यालय भी जल रहा था, और उसकी खिड़कियों से आग की तेज़ लपटों के फ़व्वारे निकल रहे थे । इसलिए हमने केन्द्र के नज़दीक शुक्केइएन उद्यान की ओर भागने का फ़ैसला किया । लपटें नज़दीक आती जा रही थीं । इमारतों के मलबे में फँसे लोगों की चीखें, अपने परिजनों को ढूँढते लोगों की आवाज़ें, मैं सब सुन पा रही थी । मगर, मैं बस भागती जा रही थी । किसी की कोई मदद नहीं कर पायी ।

शुक्केइएन उद्यान में बहुत से लोगों ने शरण ले रखी थी । हमने उद्यान के भीतर एक तालाब के ऊपर बना पुल पार किया और क्योबाशि नदी किनारे आ गये । लेकिन, अब उद्यान के पेड़ भी जलना शुरु हो गये थे और उनकी लपटें धीरे-धीरे नदी किनारे तक पहुँचने लगी थीं । और तभी नदी के नज़दीक चीड़ का एक लंबा-सा पेड़, बड़ी गड़गड़ाहट के साथ जलना शुरु हो गया । हम नदी में कूद पड़े और आसपास का नज़ारा देखने लगे, जबकि पानी हमारी छाती तक था । अब दूसरी ओर के किनारे पर ओ-सुगा कस्बा भी आग की चपेट में आ गया और लपटों की चिंगारियाँ हमारे पर एक-एक करके गिरनी शुरु हो गयीं

। दोनों तरफ़ से बढ़ती आग की गर्मी बर्दाश्त से बाहर थी, इसलिए हम शाम तक लगातार पानी में डुबकी लगाते रहे ।

इतने सारे लोग भाग कर नदी किनारे आ रहे थे, कि हमारे आसपास बैठने तक की जगह न बची । पास में ही शायद सेना तैनात रही होगी, इसलिए वहाँ बहुत से सैनिक दिखायी दे रहे थे । हमले के वक्त उन्होंने टोपियाँ पहनी हुई थीं, इसलिए उनके बाल प्लेट की शक्ल में अब भी मौजूद थे, जबकि उनका बाकि शरीर पूरी तरह से झुलस चुका था और वे दर्द में छटपटा रहे थे । अपने बच्चे को थामे चुपचाप बैठी एक औरत का धड़ फटे हुए थे और मुझे लगा, कि अब तक तो उसका बच्चा शायद मर चुका होगा ।

जले हुए और घायल लोगों की आवाज़ें लगातार सुनायी पड़ रही थीं, "कोई पानी पिला दे, अरे भाई कोई पानी पिला दे", जबकि कुछ लोग यह भी कह रहे थे, "तुम्हें पानी नहीं पीना चाहिए" । बुरी तरह झुलसे ऐसे बहुत से लोग नदी में कूद पड़े थे । शायद वो दर्द सहन नहीं कर पा रहे थे । नदी में कूदे लोगों में से ज़्यादातर, सतह पर ज़िंदा नहीं लौट पाये और नदी के बहाव में बह गये । नदी की ऊपरी धारा से शव बहते आ रहे थे और नदी की चौड़ाई भरती जा रही थी । हम नदी में थे और शव हमारी ओर बह कर आ रहे थे, इसलिए मैं उन्हें हाथ से धकेल रही थी, ताकि वो बहाव में नीचे की ओर बहते रहें । उस वक्त मैं इतनी सहमी हुई थी, कि बिल्कुल डर नहीं लगा । नरक से भी भयावह वो दृश्य मैंने अपनी इन्हीं आँखों से देखा ।

आग इतनी भीषण थी, कि हम कहीं और जा ही नहीं पाये, इसलिए हमारा पूरा दिन शुक्केइएन उद्यान के नदी किनारे बीता । सूरज ढलने को था कि तभी एक छोटी बचाव नौका, केन्द्र के कर्मचारियों की तलाश में आयी और पूर्वी अभ्यास मैदान के राहत शिविर में हमारा जाना तय हुआ । वो छोटी नौका हमें नदी के दूसरी ओर रेतीले छोर पर ले गयी । मुझे माँ की चिंता थी, जो घर पर अकेली थी, इसलिए मैंने उनसे कहा, कि मैं राहत शिविर की बजाय घर जाना चाहती हूँ । इस पर मेरे सहकर्मी ने कहा, "बेवकूफ़ मत बनो । शहर वापिस जाना ख़तरे से खाली नहीं" और इस तरह उसने मुझे ज़बरदस्ती रोक लिया । मेरा घर हिरोशिमा शहर के पश्चिमी हिस्से में मिसासा होम्माचि में था, इसलिए वहाँ पहुँचने के लिए मुझे सुलगते हुए इलाके के बीच से होकर गुज़रना था । हर कोई मेरे वहाँ जाने के ख़िलाफ़ था, इसलिए न चाहते हुए भी उनके साथ जाना पड़ा, लेकिन जैसे ही मुझे मौका मिला, मैं उनसे अलग हो गयी । कुछ लोगों ने मुझे जाते हुए देख आवाज़ लगायी, लेकिन मैंने उनसे माफ़ी माँगते हुए कहा, "मुझे माफ़

करना", और फिर अकेले घर की ओर चल दी ।

● घर वापसी का रास्ता

सहकर्मियों से अलग होने के बाद, मैं क्योबाशि नदी पर बने तोकिवा पुल पर पहुँची । पुल के पश्चिम में हाकुशिमा की ओर से ज़ख्मी लोगों के आने का ताँता लगा था । कोई भी पश्चिम की ओर नहीं जा रहा था । तब मुझे दो रेल कर्मचारी मिले जो पुल पार करना चाहते थे । वो योगोगावा स्टेशन जा रहे थे, इसलिए मैंने उनसे अनुरोध किया, "कृप्या मुझे साथ ले चलें", तो इस पर उन्होंने इंकार करते हुए कहा, "हमें मालूम नहीं, कि हम वहाँ पहुँच भी पाते हैं या नहीं, इसलिए तुम्हें साथ नहीं ले जा सकते । तुम राहत शिविर जाओ" । लेकिन मैंने हार न मानी और चार-पाँच मीटर की दूरी बनाते हुए चुपचाप उनके पीछे चलती रही । लपटों के बीच में से गुज़रते हुए वो जैसे ही पीछे मुड़ कर देखते, मैं रुक जाती और फिर उनके पीछे चल देती । मैं लगातार उनका पीछा कर रही थी, इसलिए आख़िरकार उन्होंने मुझे कहा, "अच्छा ठीक है । जहाँ-जहाँ हम चलें वहीं-वहीं चलती आओ", और फिर उन्हें जहाँ भी ख़तरा नज़र आता, वो मुझे आगाह करते गये । लपटों से बचते-निकलते हमने डाक सेवा एजेन्सी अस्पताल पार किया और मिसासा पुल पर आ पहुँचे । पुल के दोनों तरफ़ घायल सैनिक कतार में बैठे थे, और वहाँ चलना भी दूभर था । वो शायद पास में ही तैनात रहे 104 चूगोकु युनिट के सैनिक थे । सभी सैनिक कराहते हुए दर्द से तड़प रहे थे । घायल सैनिकों पर अपने पैर पड़ने से बचाते हुए हमने किसी तरह पुल पार किया और रेल पटरी पर पहुँचे और फिर पटरी के साथ-साथ चलते हुए योकोगावा स्टेशन पहुँचे । वहाँ मैं रेल कर्मचारियों से अलग हो गयी । मुझे याद है, अलग होते समय उन्होंने मुझसे कहा था, "ध्यान से घर जाना" ।

● माँ से दोबारा मिलना

मैं अकेली मिसासा स्थित अपने घर की ओर चलती गयी । अँधेरा छा चुका था । सड़क के दोनों ओर अब भी आग लगी थी । जहाँ-जहाँ लपटें तेज़ थीं, वहाँ से भाग कर निकलना पड़ रहा था । मेरा घर, योकोगावा से मिसासा होकर उत्तर दिशा की ओर जाती सड़क के सामने था । जब आखिरकार घर पहुँची, तो देखा कि घर जल कर ख़ाक हो गया था और माँ पास की सड़क पर खड़ी थी । माँ को ज़िंदा देख मैंने खुशी के मारे उसे गले लगा लिया और हम दोनों ने रोना शुरु कर दिया ।

जब अणु-बम फटा था तब मेरी माँ पहली मंज़िल पर आइने के सामने बैठी थी । पहली मंज़िल के कमरे अंदर की ओर ढह गये थे, लेकिन माँ एक कोने वाले कमरे में थी, जो ढहने से बच गया था । सीढ़ियाँ इस्तेमाल करना मुश्किल था, किसी ने माँ के लिए सीढ़ी लगायी और इस तरह वो वहाँ से नीचे उतरने में कामयाब हो गयी ।

सुबह तक मकान ढहा रहा, लेकिन बाद में आग धीरे-धीरे फैलते हुए नज़दीक आयी और दोपहर को मकान में आग लग गयी । मकान में आग लगने से पहले, माँ ने सोचा कि कम से कम गद्दे तो निकाल लिए जाएं, इसलिए माँ ने गद्दे बाहर की ओर फैंक दिये थे, लेकिन जान बचाते भागते लोग, वो गद्दे सिर पर उठा कर अपने साथ ले गये । हवाई हमले से बचने के लिए घर के आंगन में हमने एक गड्ढा खोद रखा था, जहाँ हमने कपड़े और दूसरा ज़रूरी सामान रखा था, लेकिन आग की लपटें वहाँ भी पहुँच गयीं और वो सब सामान भी जल कर ख़ाक हो गया । माँ ने आग बुझाने के लिए घर के सामने बहती नहर से पानी की बाल्टियाँ भर-भर कर डाली थीं और तुरंत वो गड्ढा खोद निकाला था, लेकिन उसमें दबा लगभग सारा सामान जल चुका था । पड़ोसियों ने माँ को मिताकि भाग चलने का सुझाव दिया, लेकिन माँ को मेरी और बहन की चिंता थी, इसलिए जब मकान जल रहा था, तो उसने सड़क पार एक खेत में शरण ली और बहन और मेरी घर लौटने की राह देखी ।

हम माँ-बेटी ने वो रात खेत में गुज़ारी । पूरी रात हमारे घर के सामने की सड़क से लोग भागते नज़र आये, जबकि कुछ राहत और बचाव के लिए आ-जा रहे थे । मैं बस वो नज़ारा दो टूक देखे जा रही थी और सोच रही थी, कि अब मेरा क्या होगा । आधी रात को कुछ राहतकर्मियों ने हमें खाने के लिए चावल के कुछ गोले दिये और अभी आँख लगी ही थी, कि सूरज निकल पड़ा ।

● बड़ी बहन की तलाश

7 तारीख को भी लोगों का आना-जाना बंद न हुआ । बड़ी बहन-एमिको अब तक घर न लौटी थी । माँ को उसकी चिंता सताए जा रही थी और वो रोते हुए कह रही थी, "उसका क्या हुआ होगा ? कहीं वो मर ही तो नहीं गयी" ? माँ की यह हालत मुझसे देखी न गयी और मैं अगले ही दिन 8 तारीख को पड़ोस में रहने वाली बहन की एक सहेली के साथ उसकी तलाश में निकल पड़ी । एक बार फिर मैंने नरक का वो नज़ारा देखा ।

मेरी बहन शिमोनाकानो कस्बे (मौजूदा नाका वॉर्ड के फ़ुकुरो कस्बे) में हिरोशिमा केन्द्रीय टेलिफ़ोन

ब्यूरो में काम करती थी । मैं योकोगावा से तोकाइचि कस्बे (मौजूदा नाका वॉर्ड का तोकाइचि कस्बा, ब्लॉक नंबर 1) से होते हुए ट्राम के रास्ते पर चलती गयी । जले हुए अवशेषों को हटाने के लिए अब तक कुछ नहीं किया गया था, लेकिन ट्राम का रास्ता चौड़ा था, इसलिए मैं किसी तरह वहाँ तक पहुँच पायी । शहर, लाशों से भरा था । अगर ध्यान न दिया जाता तो किसी भी शव पर पैर पड़ सकता था । तेरा कस्बे (मौजूदा नाका वॉर्ड) के पास एक घोड़ा, गोल बड़ा-सा फूल कर मरा पड़ा था । तोकाइचि कस्बे के आसपास, झुलस कर काला पड़ चुका एक आदमी अपनी दोनों बाहें फैलाये बिना हिले डुले खड़ा था । मुझे कुछ अजीब लगा, इसलिए जब करीब से देखा, तो पता लगा, कि वो आदमी खड़े-खड़े ही मर गया था । इधर-उधर बहुत से लोगों ने आग बुझाने की पानी की टंकियों में अपने सिर दिए हुए थे और अब उनके शवों का एक दूसरे पर ढेर लगा था । सड़कों के किनारे, लाशों का ढेर लगा था, जबकि उनके बीच में कुछ लोग अब भी साँस ले रहे थे, कुछ लोगों की कराहने की आवाज़ें भी सुनाई पड़ती थीं और कुछ लोग, "पानी, पानी" कह रहे थे । कोई भी ठीक हालत में नहीं था वहाँ । हर किसी के कपड़े जल चुके थे, शरीर भी झुलस कर फूल चुके थे । एक दम काली गुड़ियों की तरह लग रहे थे । अगर मेरी बड़ी बहन यहाँ होती, तो भी इस माहौल में उसे ढूंढ पाना नामुमकिन था । लाशों के ऊपर कदम रखते हुए मैं आइओइ पुल पार करके कामिया कस्बे (मौजूदा नाका वॉर्ड) पहुँची, लेकिन हम उससे आगे नहीं बढ़ पाये और मिसासा लौट आये । मैंने सोचा, कि इन परिस्थितियों में तो बहन ज़िंदा न होगी ।

मगर, खुशकिस्मती से अणु-बम हमले के एक सप्ताह बाद मेरी बहन अकेले घर लौट आयी । हमले के वक्त टेलिफ़ोन ब्यूरो में वो बुरी तरह ज़ख्मी हो गयी थी और बचने के लिए हिजियामा पहाड़ी की ओर दौड़ी थी, जिसके बाद उसे इलाज के लिए आकि तहसील के काइताइचि कस्बे (मौजूदा काइता कस्बा) के एक राहत शिविर ले जाया गया था । वहाँ वो एक हफ़्ता रही और जब उसने सुना कि एक ट्रक हिरोशिमा शहर राहत पहुँचाने जा रहा है, तो बहन ने उन लोगों से उसे साथ ले जाने का अनुरोध किया । एक बार तो उन्होंने बहन को मना करते हुए कहा, कि गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को ट्रक में नहीं ले जा सकते, लेकिन बहन, घर लौटने का मन बना चुकी थी, इसलिए जैसे ही उसे मौका मिला, वो उछल कर ट्रक के पीछे बैठ गयी और इस तरह वो तोकाइचि कस्बे पहुँची । तोकाइचि कस्बे से मेरी बहन चलते हुए थके हाल घर लौटी । फटे कपड़ों में मेरी बहन खून से नहायी हुई थी और पैरों में अलग-अलग जूते पहन रखे थे । अगर किसी को पता न हो तो सोचेगा, कि इस लड़की की दिमागी हालत ठीक नहीं है । हमारा मकान जल चुका था, इसलिए माँ की एक सहेली ने अपने घर के एक कोने में बहन को सोने

की जगह दी । उसके तुरंत बाद उसने बिस्तर पकड़ लिया और वो ज़िंदगी और मौत के बीच लटकने लगी ।

● मेरी बहन की देखभाल

बहन की पूरी पीठ में शीशे के टूकड़े घुस चुके थे और उसकी बाजू अनार की तरह फट गयी थी । हर दिन सुई से मैं उसकी पीठ से शीशे के टुकड़े निकाला करती थी, लेकिन मक्खियों ने उसके घावों में अंडे दे दिये थे । जिस महिला के घर मेरी बहन ठहरी थी, उसकी बेटी अणु-बम हमले में मारी गयी थी, जिससे हमें लगा कि हम उसे परेशानी पहुँचा रहे हैं, इसलिए हम अपने मकान के जले हुए अवशेषों में लौट आये । मेरा सबसे बड़ा भाई आया और जली हुई लकड़ी इकठ्ठा कर उसने एक छोटा-सा शिविर बनाया, जो हमें बारिश से बचा सके, इसलिए हम वहाँ चले गये ताकि मेरी बहन की देखभाल की जा सके । मेरी बहन जिसने बिस्तर पकड़ा हुआ था, उसे राहत शिविर भी नहीं ले जाया जा सकता था, इसलिए किसी ने हमें थोड़ी-सी मरहम दी लेकिन मेरी बहन को पूरी तरह ठीक करने के लिए वो काफ़ी न थी । उसके बाल पूरी तरह से झड़ चुके थे और खाँसी के साथ उसे खून आ रहा था, जिससे हमें कई बार ख़्याल आया, कि उसका अंत नज़दीक है । मेरी माँ हर दिन पहाड़ी से दोकुदामी (एक तरह की जापानी जड़ी-बूटी) की पत्तियाँ तोड़ कर लाया करती थी, और उन हरी पत्तियों को वैसे के वैसे ही घोट-उबाल कर मुझे और बहन को चाय के बदले पीने को देती थी । दोकुदामी हरी पत्ति की चाय की गंध बहुत तेज़ थी, लेकिन माँ का कहना था, कि यह शरीर से ज़हर निकालने की दवा है । शायद वो चाय काम कर गयी, क्योंकि मेरी बहन जो करीब तीन महीने से खड़ी होने लायक भी न थी, उसकी हालत में सुधार होने लगा और बाद में वो काम पर भी लौट गयी । जब तक उसके बाल नहीं आये वो अपना सिर स्कार्फ़ या टोपी से ढकती रही । उसके ज़ख्मों के निशान अब भी बाकि थे, इसलिए वो कभी बिना बाजू के कपड़े न पहनती और आज भी उसकी छिदी हुई बाजू गड्ढेदार है ।

● ज़िंदगी युद्ध के बाद

युद्ध समाप्त होने की ख़बर मुझे लोगों से मिली । यह ख़बर सुन कर मुझे बिल्कुल यकीन न हुआ । बचपन से हमें सिखाया गया था, कि जापान कभी हार नहीं सकता और मुझे भी पूरा यकीन था । प्रसारण केन्द्र में काम करते समय भी हमेशा जीतने की ही बात होती थी, हारने का कभी कोई ज़िक्र नहीं होता

था । लेकिन जब मैंने सुना, कि नागासाकि में भी अणु-बम गिराया गया है, तो सोचा, अगर इसी तरह हम पर बार-बार बम गिराये जाने हैं, तो बेहतर होगा युद्ध समाप्त हो जाए ।

कामि-नागारेकावा कस्बे की इमारत इस्तेमाल लायक नहीं रही थी, इसलिए प्रसारण केन्द्र को आकि तहसील के फ़ुचू कस्बे में तोयो इंडस्ट्रीज़ कंपनी में स्थानांतरित कर दिया गया । मुझे बहन की देखभाल करनी थी, और तोयो इंडस्ट्रीज़ कंपनी दूर होने के कारण ट्रेन से आना-जाना पड़ता था । ठीक उन दिनों जापान में दुश्मन सेना आ पहुँची थी, और ऐसी अफ़वाहें थी, कि वो महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार कर सकती है, इसलिए मैंने प्रसारण केन्द्र की नौकरी छोड़ दी । उसके बाद, मैंने करीब एक साल तक पड़ोस की एक कंपनी में काम किया और फिर अपने शिक्षक की सिफ़ारिश से एक अन्य कंपनी में कुछ समय काम किया और उसके बाद मैंने शादी की ।

हालांकि 6 और 8 अगस्त को मैं हिरोशिमा शहर में ही थी, लेकिन अणु-बम से मुझे कभी कोई बड़ी बीमारी नहीं हुई । कहते हैं, कि ऐसी बीमारियाँ कभी भी हो सकती हैं, लेकिन मैंने कभी बीमारी के डर की बात अपने मुँह से नहीं निकाली । अगर बीमार पड़ी तो तब की तब देखेंगे । इससे भी ज़्यादा मैंने हमेशा यही सोचा, कि मैं भविष्य में क्या करूंगी ।

● शाँति की कामना

अब तक मैं अणु-बम के बारे में बात नहीं करना चाहती थी । हालांकि मैं हर साल अणु-बम पीड़ितों की स्मारक पर श्रदांजली देने जाती हूँ, लेकिन शुक्केइएन उद्यान दोबारा कभी नहीं गयी, जहाँ मैं 6 अगस्त को थी । अब शुक्केइएन उद्यान एक सुंदर पार्क बन गया है, लेकिन अगर मैंने तालाब के ऊपर बना वो गोल पुल दोबारा देखा, तो मुझे उस दिन की दहशत फिर याद आ जायेगी, इसलिए मैं वहाँ नहीं जाना चाहती । उसे याद करते ही, मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं और शब्द गले में अटक जाते हैं ।

अणु-बम का शिकार हुए बहुत से लोग अब इस दुनिया में नहीं रहे हैं । गिनती के ही लोग बचे हैं जो इस बारे में बात कर सकें । मेरी भी उम्र होती जा रही है, लेकिन अब नरक के उस दृश्य की बात छिड़ी है, जो मुझे अब भी अच्छी तरह याद है, तो मैं युवाओं से कहना चाहूँगी, कि परमाणु हथियार दोबारा इस्तेमाल न करने दिये जायें । मेरा पोता प्राथमिक स्कूल में है और वो युद्ध तथा शाँति में दिलचस्पी रखता है । वो इतना बड़ा हो गया है, कि मेरे से पूछता है, "दादी, क्या आपने अणु-बम विभीषिका झेली थी" । मैं सच्चे दिल से प्रार्थना करती हूँ, कि एक ऐसी दुनिया बने, जहाँ किसी को भी ऐसी तकलीफ़ें

न झेलनी पड़ें ।

शीर्षक	**"अणु-बमबारी के संस्मरणों का संग्रह" के लेखन में सहयोग का प्रकल्प**
संस्करण का क्रम	दूसरा संस्करण
प्रसार दिनांक	31 मार्च 2013
संपादक	हिरोशिमा पीस कल्चर फाउंडेशन
जारीकर्ता	स्वास्थ्य, श्रम और जन-कल्याण मंत्रालय
	1-2-2 कासूमिगासेकी, चियोदा-कू, तोक्यो
	+81 (0)3-5253-1111